मिथिलाभाषाक

सुबोध व्याकरण

आठम वर्गक हेतु

रमानन्द झा 'रमण'
16 अक्टूबर 1981
पटना

विद्यापति प्रेस
दड़िभंगा

मुल्य ॥=)॥

मिथिलाभाषाक

सुबोध व्याकरण

आठम वर्गक हेतु

रमानन्द झा (?)
16/10/1981
पटना

लेखक—

श्री आनन्द मिश्र

एम्. ए., साहित्यरत्न

विद्यापति प्रेस

दड़िभंगा

प्रकाशक
विद्यापति प्रेस
लहेरियासराय

मुद्रक—
श्री हनुमानप्रसाद
हिमालय प्रेस, पटना।

अवतरणिका

व्याकरण:—

(क) हम गाम गेलहुँ।

(ख) तोँ गाम गेलहुँ।

(ग) हम गाम गेलाह।

(घ) ओ अएलाह।

(ङ) ओ अएलथि।

उपर्युक्त पाँचो वाक्यमे पहिल, चारिम तथा पाँचमवाक्य भाषा—मध्य प्रयुक्त होइछ, तथा दोसर एवं तेसर वाक्य भाषामध्यप्रयुक्त नहि होइछ।

कोनहु भाषाक विषयमे एहि प्रकारक ज्ञान जाहि शास्त्र द्वारा होइछ ओ शास्त्र ओहि भाषाक *व्याकरण* कहबैछ।

उपर्युक्त तीनिहु वाक्य जे भाषामध्य प्रचलित अछि, ताहि मध्य पाँचम वाक्यक प्रयोग साहित्यमे नहि होइछ, तथा साधारणतया नेनालोकनिक हेतु बनल व्याकरणमे केवल साहित्य मे प्रयुक्त पदक अथवा वाक्य क वर्णन रहैत अछि।

तेँ व्याकरणक दृष्टिसँ ओ वाक्य वा पद अशुद्ध थीक जकर प्रयोग साहित्यमे नहि होइत हो; तथा जकर प्रयोग साहित्यमे होइत हो से शुद्ध थीक।

मैथिलीक व्याकरण—जाहि ग्रन्थमध्य मैथिलीक साहित्यमे प्रयुक्त पद तथा वाक्य सबहिक वर्णन हो से मैथिलीक व्याकरण भेल।

कोनहु भाषा—मध्य प्रयुक्त पदक तथा वाक्यक संख्याक निर्धारण करब यदि असम्भव नहि त कठिन धरि अवश्ये अछि। दोसर कथा ई जे यदि कोनहु भाषामध्य प्रयुक्त प्रत्येक पदक वर्णन करए लागब त व्याकरण ततेक ने विस्तृत भए जाएत जे ओकर पढ़ब कठिन भए जाएत। तेँ व्याकरणमे एहि विधिक आश्रय कएल जाइछ जे कोनहु साधारण आधार पर अनेको पद तथा वाक्यक वर्गीकरण कए देल जाइछ तथा कोनहुँ वर्गक वर्णन कए देने तकर अन्तर्गत ओकर समान-धर्मी सबहि पदक तथा वाक्यक वर्णन भए जाइछ।

२. *व्याकरणक विभाग*—

भाषामध्य हम केवल वाक्यहिक प्रयोग करैत छी। 'हम' एकर, वा 'जाइत' वा 'छी' एहि मध्य कोनहु एकटा मात्रक प्रयोग हम नहि करैत छी। जखन बाजब तँ बाजब—

(१) 'हम जाइत छी,'

(२) 'राम हाथी पर चढ़ल छथि'

(३) सीतादाइ नैहर कहिआ अओतीह।' इत्यादि।

ई तीनू टा भेल *वाक्य*

एवं 'हम,' जाइत,' 'छी,' 'राम,' 'हाथी पर' इत्यादि भेल पद।

प्रत्येक वाक्यमे अनेको पद होइछ।

प्रत्येक पदमे अनेको अक्षर होइछ। यथा—'हाथी पर' एहि वाक्य-मध्य। 'हा,' 'थी,' 'प,' 'र,' ई चारिटा अक्षर भेल। मुदा 'हा' बराबरि अछि 'ह्' तथा 'आ' क। ई 'ह' तथा 'आ' दुइ टा *ध्वनि* भेल। अर्थात् पदक ओ अंश जकर खण्ड नहि भए सकए तकर नाम थीक *ध्वनि*।

एहि प्रकारेँ व्याकरणक तीनिटा विभाग भेल। '*ध्वनिविभाग*' '*पदविभाग*' *तथा; वाक्यविभाग;*

सुविधाक हेतुएँ एही क्रमे व्याकरणमध्य ओकर तीनू विभागक वर्णन कएल जाइ।।

ध्वनितत्त्व।

मैथिली मध्य एतेक ध्वनिक व्यवहार होइछ

स्वर।

अ आ, इ, उ, ए ओ, अए तथा अओ।...

व्यञ्जन।

क ख् ग् घ् ङ .... कवर्ग

च छ, ज् झ् ञ् .... चवर्ग

ट् ठ्, ड्, ढ, ण् ड़, ढ़ ... टवर्ग

त् थ् द्, ध्, न् .... तवर्ग

प्, फ्, ब्, भ्, म् .... पवर्ग

य्, र्, ल, व्, ... अन्तःस्थ

श्, ष्, स् ह .... ऊष्म

अनुस्वार, विसर्ग।

स्वर मध्य प्रत्येक ह्रस्व एवं दीर्घ होइछ, तथा 'अ' 'इ' ए 'उ' ह्रस्वतर सेहो होइछ। स्वरक ह्रस्व एवं ह्रस्वतर रूपक हेतु पृथक् लिपि नहि अछि, ह्रस्वक बोधक लिपिसँ ह्रस्वतर स्वरहुक बोध कराओल जाइछ। एवं 'ई,' 'ऊ' 'अए' एवं 'अओ'-क अतिरिक्त दीर्घ स्वरक रूपक हेतु विशेष लिपि नहि अछि।

'इ'कारक दीर्घ 'ई'

'उ' क दीर्घ 'ऊ'

'अए' क दीर्घ रूप 'आए'

'अओ' क दीर्घ रूप 'आओ।

ह्रस्वतर स्वर सबहिक उदाहरण

अ—बात, बितलाहा।

—इमाटि, भरिगर, बाढ़ि।

उ—सातु बरुका।

ह्रस्व स्वर सबहिक उदाहरण

अ—गरभाएल। घरबाह।

आ—रामनामा। सासुर

इ—हिनका, चिलका तिलक।

उ—हुनक, बादुर, गाउ।

ए—एकट्टा, तेबड़ाओल।

ओ—ओकर दोबड़ाओल।

अए—कएल।

अओ—अओताह।

दीर्घ स्वर सबहिक उदाहरण।

अ—घर। बड़।

आ—आम, सासु।

ई—पीड़ा, दीप।

ऊ- धूप, ऊख

ए—बेस, बेरि।

ओ—ओस, चोर।

आए—आएल, पाएर।

आओ—आओत, गाओल।

केओ-केओ अए तथा आएक स्थानमे अय वा ऐ एवं अओ तथा आओक स्थानमे औ वा आव लिखैत छथि से सर्वथा अशुद्ध थीक।

अशुद्ध	शुद्ध
कयल, कैल	कएल
बैलगाड़ी, बयलगाड़ी	बएलगाड़ी।
अयलाह वा ऐलाह	अएलाह
पावल वा पौल	पाओल।
पायर वा पैर	पएर।
खायर वा खयर वा खैर	खएर।
गवराह वा गौताह	गओताह।
मैना बड़द	मएनाबड़द।
सौरा बड़द	सओरा बड़द।
	इत्यादि।

एक स अधिक स्वर यदि। एकहि अक्षरमे उच्चारित हो त ओ संयुक्त स्वर कहबैछ। मैथिली मध्य दुइटा संयुक्त स्वर अछि– ऐ तथा औ।

ऐ = अइ,

औ = अउ,

यथा—

दैत = दइत

बैसकी = बइसकी

दौड़ = दउड़

चौदह = चउदह।

इत्यादि।

केओ-केओ 'ऐ' तथा "औ' क स्थानमे क्रमशः 'अइ' एवं 'अउ' लिखितहु छथि

व्यञ्जन सबहिक उच्चारण साधारणतया संस्कृत क समान होइछ। एहि प्रसंग मे अधोलिखित विषय सबहि पर विशेष ध्यान देबाक चाही।

पदक आदिमे वर्त्तमान 'य' क उच्चारण 'क' होइछ।

यथा—जथा

यूप—जूप

योग—जोग

पदक मध्य स्थानमे व्यहृत एकस्वर 'य' क उच्चारण 'ज्' क समान होइछ यदि 'य'-क उच्चारण पश्चात्—क

स्वर'अ वा आ' क अतिरिक्त कोनहु स्वर हो। र-क परवर्ती 'य' क उच्चारण 'ज' होइछ।

अयोध्या–अजोध्या। कार्य–कार्ज। वाय्वादित्य—वाज्वादित्य। उपयोग–उपजोग। सूर्य सूर्ज।

एहि दूनू अवस्थाक अतिरिक्त अवस्थामे 'य' क उच्चारण संस्कृतक समान होइछ

नियम, आय, दायी अवयव दायाद. अभ्यास, वाक्य, वायु इत्यादि।

यदि पदक आदिमे 'य' रहए, परन्तु समास भेलाक कारणे ओहिसमस्त पदक आदिमे 'य' नहि रहि सकए त ओकर उच्चारण 'ज' रहि जाइछ।

योग्य—जोग्य, अयोग्य—अजोग्य

यश—जश, अयश—अजश।

तथा सुयश, दुर्जश, इत्यादि।

'ह्य' क उच्चारण 'ज्झ' होइछ

ग्राह्य—ग्राज्झ,

बाह्य—बाज्झ।

कोनहु व्यञ्जनक परवर्त्ती 'व' क उच्चारण संस्कृतक समान होइछ।

अश्व, लब्धाधार, पृथ्वीश

'द' क परवर्त्ती 'व' क तथा अश्व-आदिक अतिरिक्त स्थलमे 'व' क उच्चारण 'ब' होइछ।

एक स अधिक स्वर यदि । एकहि अक्षरमे उच्चारित हो त ओ संयुक्त स्वर कहबैछ । मैथिली मध्य दुइटा संयुक्त स्वर अछि— ऐ तथा औ ।

ऐ = अइ,

औ = अउ,

यथा—

दैत = दइत

बैसकी = बइसकी

दौड़ = दउड़

चौदह = चउदह ।

इत्यादि ।

केओ-केओ 'ऐ' तथा "औ' क स्थानमे क्रमशः 'अइ' एवं 'अउ' लिखितहु छथि

व्यञ्जन सबहिक उच्चारण साधारणतया संस्कृत क समान होइछ । एहि प्रसंग मे अधोलिखित विषय सबहि पर विशेष ध्यान देबाक चाही ।

पदक आदिमे वर्त्तमान 'य' क उच्चारण 'क' होइछ ।

यथा—जथा

यूप—जूप

योग—जोग

पदक मध्य स्थानमे व्यहृत एकस्वर 'य' क उच्चारण 'ज' क समान होइछ यदि 'य'-क उच्चारण पश्चात्—क

स्वर'अ वा आ' क अतिरिक्त कोनहु स्वर हो। र-क परवर्ती 'य' क उच्चारण 'ज' होइछ ।

अयोध्या–अजोध्या । कार्य--कार्ज । वाय्वादित्य—वाज्वादित्य ।

उपयोग–उपजोग । सूर्य सूर्ज ।

एहि दूनू अवस्थाक अतिरिक्त अवस्थामे 'य' क उच्चारण संस्कृतक समान होइछ

नियम, आय, दायी अवयव दायाद. अभ्यास, वाक्य, वायु इत्यादि ।

यदि पदक आदिमे 'य' रहए, परन्तु समास भेलाक कारणे ओहिसमस्त पदक आदिमे 'य' नहि रहि सकए त ओकर उच्चारण 'ज' रहि जाइछ ।

योग्य—जोग्य, अयोग्य—अजोग्य

यश—जश, अयश—अजश ।

तथा सुयश, दुर्जश, इत्यादि ।

'ह्य' क उच्चारण 'ज्झ' होइछ

ग्राह्य—ग्राज्झ,

बाह्य—बाज्झ ।

कोनहु व्यञ्जनक परवर्त्ती 'व' क उच्चारण संस्कृतक समान होइछ ।

अश्व, लघ्वाधार, पृथ्वीश

'ह' क परवर्त्ती 'व' क तथा अश्व-आदिक अतिरिक्त स्थलमे 'व' क उच्चारण 'ब' होइछ ।

बह्माश = बह्मारा ।

बयस = बयस् ।

इत्यादि ।

क्ष = 'क + ष्' क उच्चारण 'क्छ' क समाम होइछ ।

ज्ञ = एव ज् + ञ' क उच्चारण ग्यँ होइछ ।

पक्ष = पक्छ । ज्ञान = ग्याँन ।

टवर्गसँ संयुक्त 'ष' क उच्चारण संस्कृतक समान ऊष्म होइछ ।

कृष्ण, कष्ट, स्टेशन ।

ष्प, ष्फ,—क उच्चारण विसर्ग + प तथा फ होइछ ।

पुष्प = पुःफ, निष्फल = निःफल ।

एहिसँ भिन्न स्थलमे 'ष' क उच्चारण 'ख' होइअ ।

भाषा—भाखा । सुषुप्ति—सुखुप्ति ।

ग्रीष्म-ग्रीख्म ।

प्रत्येक स्वर अनुनासिक तथा निरनुनासिक होइछ ।

सन्धिप्रकरण

दुइ ध्वनिक अतिशय सामीप्यक नाम सन्धि वा संहिता थीक ई संहिता तीनि प्रकारक होइछ । स्वरक-स्वरक संग। व्यञ्जनक स्वर वा दोसर व्यञ्जनक संग ! तथा विसर्गक स्वरक वा व्यञ्जनक संग ।

अतएव सन्धि तीनि प्रकारक होइछ । मुदा एहन सन्धि

कएल पद सबहिक प्रयोग संस्कृतसँ लेल पदमात्रमे होइछ तैं सन्धिक नियम संस्कृतक व्याकरणवत् जानक चाही ।

(१) स्वर—सन्धि—

स्वरक संग जखिन स्वरक सान्निध्य होइछ ओकरा स्वर सन्धि कहल जाइछ । ई पाँच प्रकारक हेइत अछि-दीर्घ, गुण वृद्धि, यण तथा अयादि ।

(१) दीर्घ—

(१) देव + अलय—देवालय

(२) परम + अर्थ = परमार्थ

(३) विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

अभि + इष्ट = अभीष्ट

(५) मातृ + ऋण = मातृण

ऊपर जे उदाहरण देल गेल अछि ताहिसँ ज्ञात होइछ जे यदि ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ तथा ऋक पश्चात क्रमशः ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, तथा ऋ रहए तँ दूनू मीलि क्रमशः आ, ई, ऊ, तथा ॠ भए जाइछ । एकरे कहैत छैक दीर्घ सन्धि, कारण ह्रस्व वा दीर्घ स्वरसँ ह्रस्वसँ वा दीर्घक मेल भेलासँ ओकर जे अक्षर बनैत छैक ताहिमे दीर्घ स्वर होइत छैक ।

(२) गुण—

(१) भीम + इन्द्र = भीमेन्द्र

(२) परम + ईश्वर = परमेश्वर

(३) महा + इन्द्र = महेन्द्र

(४) परम + उदार = परमोदार

(५) देव + ऋषि = देवर्षि

एहि उदारण सभकेँ देखलासँ ई ज्ञान होइछ जे ह्रस्व तथा दीर्घ अकारक पश्चात् यदि इ, उ तथा ऋ रहैछ त क्रमशः ओ सभ ए, ओ तथा अर् भए जाइछ। एकरे कहैत छैक गुण।

(३) वृद्धि—

(१) एक + एक = एकैक

(२) धन + ऐश्वर्य + धनैश्वर्य

(३) तथा + एव = तथैव

(४) महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(५) वन + औषधि = वनौषधि

एहि उदाहरण सभसँ इएह निश्चय होइछ जे जँ 'अ' तथा 'आ'-क पश्चात् ए, ऐ तथा ओ, औ रहए तखन ओ क्रमशः 'ऐ' तथा 'औ' मे बदलि जाइछ। एहि सन्धिकेँ वृद्धि कहल जाइछ।

(४) यण—

(१) यदि + अपि = यद्यपि

(२) प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

(३) अनु + अय = अन्वय

(४) पितृ + अर्थ = पित्रर्थ

तात्पर्य ई भेल जे जँ इ, उ तथा ऋक पश्चात् कोनो एहन स्वर अबैक जे ओकरा सन नहि छैक तखन ओ क्रमशः बदलि केँ य, व, तथा र भए जाइछ। एकरा कहैत छैक यण।

(५) अयादि—

(१) ने + अन = नयन

(२) नै + अक = नायक

(३) पो + अन = पवन

(४) पौ + अक = पावक

पहिसँ ई सिद्ध होइछ जे जँ 'ए', 'ऐ', 'ओ' तथा 'औ'क स्थानमे क्रमशः अय, आ, 'अव' तथा 'आव' भए जाइछ। एकरा अयादि कहल जाइछ।

अभ्यास

(१) सन्धि ककरा कही? स्वर सन्धि कतेक प्रकारक होइछ? उदाहरण सहित लिखू।

(२) नीचाँ लिखल शब्द सभमे सन्धि करू—रमा + ईश, सुर + इन्द्र, कवि + इन्द्र, पीत + अम्बर, मार + आतुर, गो + ईश, नौ + ईश्वर, महा + उपाध्याय।।

(३) अधोलिखित शब्द सभमे वर्त्तमान सन्धिक विच्छेद करू—गिरीश, सदैव, राजर्षि, सूर्योदय, पावक।

(४) निम्नलिखित वाक्य सभमे कतए-कतए कोन-कोन सन्धि भेल अछि तथा ओकर नियम की छैक?

(१) महेश बड़े दयालु छथि

(२) परमानन्द प्रत्युपकारी छथि

(३) स्वरान्तपदक संग स्वरादिपदक मेल स्वर-सन्धि थीक।

व्यञ्जन—सन्धि

(१) वाक् + आडम्बर = वागाडम्बर

वाक् + ईश = वागीश

अच् + अन्त = अजन्त

अप + ज = अब्ज

परिव्राट् + उवाच = परिव्राडुवाच

क्, च्, ट, वा पक पश्चात् कोनो स्वर अथवा दोनो वर्गक तेसर वा चारिम वर्ण अथवा य् र्, ल्, व्, अथवा 'ह' रहलासँ क्रमशः 'ग', 'ज', 'ड', 'ब' भए जाइछ।

(२) जगत् + ईश = जगदीश

उ् + घाटन = उद्घाटन

तत् + धन = तद्धन

सत् + वंश = सद्वंश

एहिसँ ई नियम बहराएल जे यदि कोनो शब्दक अन्तमे 'त्' हो आओर ओकर पश्चात् कोनो स्वर अथवा ग्, घ, द्, ध, ब् भ्, य् र, तथा 'व' रहए 'त्' बदलिकए द्' भए जाइछ।

(३) वाक् + मय = वाङ्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

उत् + मत्त = उन्मत्त

एहिसँ ई जनबाक चाही जे जँ कोनो वर्गक प्रथम अक्षरक आगू सानुनासिक वर्ण हो, तखन प्रथम वर्णक स्थानमे ओही वर्णक सानुनासिक भए जाइछ।

(४) उत् + चारण = उच्चारण

तत् + टीका = तट्टीका

महत् + छत्र = महच्छत्र

एहिसँ ई तात्तपर्य बहराएल जे जखन 'त' अथवा द्' क पश्चात् चवर्ग अथवा टवर्गक पहिल वा दोसर वर्ण रहैछ तखन 'त्' अथवा 'द्' क स्थानमे 'च' वा 'ट्' भए जाइछ।

(५) उत् + लेख = उल्लेख

उत् + लंघन = उल्लंघन

बृहद् + ललाट = बृहल्ललाट

महान् + लाभ = महालँ लाभ

एहिसँ ई निष्कर्ष बहराइछ जे यदि 'त' अथवा 'द्' क पश्चात् 'ल' रहए तखन त्, द्, न, बदलि 'ल्' भए जाइछ आओर 'न्' क स्थान पर भेल ल सानुनासिक भए जाइछ।

अभ्यास

(१) सन्धि करू—महत् + टंकार, तत् + लीला, चित आनन्द, चित् + मय, प्राक् + मुख।

(२) संधिविच्छेद करू—तल्लीन, वाग्दान, षड् दर्शन, तद्धित।

विसर्ग—सन्धि

(१) निः+चय = निश्चय

धनुः+टंकार = धनुष्टंकार

दुः+तर = दुस्तर

निः+सार = निस्सार

एहिसँ ई नियम बहराइछ जे यदि विसर्गक पश्चात 'च' छ, अथवा 'श' हो तँ विसर्गक श, यदि त् थ्, अथवा 'स' हो त विसर्गक स् आओर यदि ट, ठ अथवा 'ष' रहए तखन विसर्गक 'ष्' भए जाइछ।

(२) मनः+हर = मनोहर

तेजः+मय = तेजोमय

मनः+भाव = मनोभाव

नियम—यदि वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम अथवा य, र, ल, व, ह्, पश्चात् रहए तथा पूर्वमे अकार रहए तँ विसर्ग सहित 'अ' क स्थानमे ओ भए जाइछ।

एहि सन्धि सभक विचार संस्कृत व्याकरणमे पूर्ण रूपसँ कएल गेल अछि। मैथिली भाषा-मध्य एकर प्रयोजन कम होइछ। संस्कृतक जाहि शब्दक प्रयोग एहिमे होइत छैक केवल ताहीठामे एकर प्रयोजन होइछ अन्यथा मैथिलीमे सन्धिक कार्य नहि होइछ।

पद—प्रकरण

(१) राम अएलाह
(२) ई घोड़ा तेज अछि
(३) ललका फूल लाउ
(४) ओ देखैत छथि
(५) उपरमे पोथी राखल अछि
(६) मोहनक बेटा बड़ सुन्दर छथीन्ह
(७) हुनका लए मधुर आनि दिअ
(८) घरसँ पानि लाउ
(९) कोठीमे धान छैक

एहि वाक्य सभमे हमरा लोकनिकेँ दू प्रकारक पद भेटैछ। एकटा एहेन जे कोनो पदार्थक नामक बोध करएबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि तथा दोसर एहेन जकर प्रयोग कोनो क्रियाक द्योतक थीक। एहिमे पहिलके नाम तथा दोसरके धातु कहल जाइछ। किन्तु एहिमे कतेक एहनो शब्द अछि जाहिसँ दूनूमेसँ एहन कोनो काज नहि होइछ यथा—"मोहनक' एहिमे 'क', 'घरसँ' एहि मे 'सँ' इत्यादि तथा 'छैक' मे 'इक आदि एहिसँ कोनो अपन पृथक अर्थ नहि बहराइत अछि। ई सभ नाम वा धातु क अन्तमे आबि ओकर रूपकेँ बदलि ओकर विशेष अर्थक द्योतन करबैछ। एकरा विभक्ति ओ त्यय कहल जाइछ।

आब एतए ई प्रश्न उठैत अछि जे विभक्ति ओ प्रत्यय की भेद?

(१) जे वर्ण वा वर्ण—समूह शब्द अथवा धातुक अन्तमे

आबि अन्य शब्द वा धातु बनबैछ ओकरा प्रत्यय कहल जाइछ।

(२) वाक्य प्रयोगक समयमे शब्द वा धातुक पश्चात् जे वर्ण क वा वर्ण-समूहक योग होइछ, तकरा विभक्ति कहल जाइछ।

भेद एहि दूनूमे ई जे प्रत्ययक पश्चात् आन प्रत्यय ओ विभक्तिक प्रयोग होइछ किन्तु विभक्तिक पर से नहि।

पदक परिभाषा हम पूर्वे कए देल अछि। विभक्तियुक्त शब्द ओ धातुकेँ पद कही। वाक्यमे पदक प्रयोग होइत छैक, शब्द ओ धातुक नहि।

ऊपर कहल गेल अछि जे पद दुइ प्रकार होइत अछि (क) नाम—पद तथा (ख) क्रिया—पद।

शब्द (नाम) क अन्तमे विभक्तिक योग भेलासँ नाम—पद बनैत अछि—जेना—मोहनक, घरसँ, कोठीमे।

धातुक अन्तमे विभक्ति जोड़लासँ क्रिया—पद उत्पन्न होइछ जेना—कहने जएताह। गाबए, जाओ।

शब्दकेँ ओ धातु केँ अर्थ होइत छैक, किन्तु विना विभक्तिक सहायतासँ कोनो अर्थक प्रकाश नहि होइछ। केवल मोहन, घर वा 'छ' वा 'ल' सँ कोनो अर्थ नहि बहराइछ किन्तु एहि सबमे विभक्तिक योग भेलासँ एकर अर्थ स्पष्ट होइछ।

प्रत्यय सभक सेहो अर्थ होइछ किन्तु एकसर रहलेँ नहि। जखन कोनो शब्दक ओ धातुक पर एकर प्रयोग होइछ ओ

ओकरो पश्चात् विभक्तिक तथा प्रत्ययक प्रयोग होइछ तखन एकर अर्थ होइछ अन्यथा एहिसँ कोनो अर्थ नहि बहराइछ।

आब एहिसँ ई बोध भेल जे विभक्ति दुइ प्रकारक होइछ—(क) शब्द—विभक्ति ओ (ख) धातु—विभक्ति।

(क) शब्द पर 'क', 'सँ' 'मे' इत्यादि विभक्ति लगैछ से "शब्द--विभक्ति" कहबैछ।

(ख) धातुक पश्चात् जे 'ईह' 'अथि' आदि विभक्ति लगैछ से धातु—विभक्ति कहबैछ।

उपर जे उदाहरण देल गेल अछि ताहिसँ देखबामे आओत जे मिथिला भाषामे अनेक ठाम नामक पश्चात् कोनो विभक्ति नहि रहैछ, जेना—"राम अएलाह" ई घोड़ा बड़ा तेज अछि' एहिमे 'रामक' तथा 'घोड़ाक' पर कोनो विभक्तिक प्रयोग नहि अछि।

राम खाइत छथि
घोड़ा चरैत अछि
हम जाइत छी
तोँ जाइत छएँ.

एहि सबमे देखैत छी जे दू वा अधिक पदक प्रयोग कएल गेल अछि तथा एहिसँ एक गोट अर्थ बहार भए रहल अछि। केवल 'राम' अथवा 'राम खाइत' सँ कोनो अर्थ नहि होइत तेँ ओ वाक्य नहि कहाए सकैत अछि। वाक्य, जेना हम पूर्वहि कहल अछि, एहन पदक समूहकेँ कहल जाइछ जाहिसँ

अर्थक बोध हो। तेँ वाक्यक परिभाषा एहि रूपेँ कएल जा सकैछ-दू वा अधिक पद जखन एकठाम भए पूर्ण अर्थक प्रकाश करैछ तखन ओहि पद सबहिकेँ वाक्य कही।

उदाहरणक पहिल वाक्यमे तीनि गोट पद अछि, राम, खाइत, छथि किन्तु 'राम खाइत' ई ओकर अंश भेल, ओकरा 'वाक्यांश' कहैत छैक, पद नहि।

(१) भूमि, जल, पर्ब्बत, हिमालय, राम, साधुता

(२) हम, अहाँ, तोँ ओ

(३) विद्वान, शीतल, नीक, अधलाह

(४) किन्तु, परन्तु, अतएव

(५) कएल, गेलहुँ, जाएब

ऊपर पाँच प्रकारक पदक उदाहरण देल गेल अछि। एहिमे पहिल चारि गोट भेद नाम पद कहबैछ तथा पाँचम क्रिया-पद।

विशेष्य

पहिल उदाहरणकेँ देखलासँ ई ज्ञात होइछ जे ओ सब कोनो द्रव्यक, जातिक, गुणक अथवा कार्यक द्योतक थीक। एकरा विशेष्य कही।

किन्तु एहि उदाहरण सबमे त सब पद एक प्रकारक नहि अछि। ओकरामे भेद छैक। ओकर श्रेणी विभाग एहि रूपेँ कएल जा सकैछ—

[१] प्राणिवाचक—यथा—देवता, मनुष्य; हिन्दू, ब्राह्मण, क्षत्रिय, राम, मोहन।

एहि सबमे हम देखैत छी जे एक प्रकारक पद नहि अछि ओहिमे भेद छैक, मनुष्यसँ ब्राह्मणक, क्षत्रियक-मुसलमानक, हिन्दूक सभक बोध भए सकैछ, ओकर व्याप्ति किछु विशेष छैक तेँ एहि सभकेँ एक वर्गमे नहि राखि सकैत छी—प्राणिवाचक शब्द सबकेँ तिन श्रेणीमे बाँटि सकैत छी—

(१) जातिवाचक—मनुष्य, देवता, राक्षस, पशु, पक्षी,

(२) सामान्य संज्ञाबोधक—मैथिल, अङ्गरेज, ब्राह्मण, क्षत्रिय हिन्दू, मुसलमान।

(३) विशेष-संज्ञाबोधक—राम, सीता, विद्यापति, गोविन्द।

एकर अतिरिक्त हमरा लोकनिकेँ एहनो शब्द भेटैछ जकरा अप्राणिवाचक कहि सकैत छी यथा—भूमि, जल, नदी, देश, पृथ्वी, सूर्य, बुद्धि, बल, एक, दु, तीन, इत्यादि।

एकरहु हम सब पाँच श्रेणीमे बाँटि सकैत छी—

(१) द्रव्य बोधक—जल, भूमि आदि

(२) जाती बोधक—पर्ब्बत, नदी, देश आदि

(३) संज्ञा बोधक—गंगा, हिमालय, पृथ्वी आदि

(४) शक्ति ओ गुण बोधक—पराक्रम, बुद्धि, बल, साधुता।

(५) संख्यावाचक—एक, दु, दश, पाँच

संख्यावाचक शब्द सब कखनहुँ-कखनहुँ प्रयोगक कारणे विशेषण जकाँ ओ कखनहुँ विशेष्य जकाँ प्रयुक्त होइछ।

* अन्य प्रकारक नामक वर्णन यथाक्रम पश्चात् कएल जाएत

सर्वनाम

(१) हम जाइत छी।

(२) के जाइत अछि ?

(३) ककरा कहबैक ?

एहि वाक्य सबमे 'हम' 'के' तथा 'ककरा'क प्रयोग एहि रूपे भेलैक अछि जाहिसँ ई ज्ञात होइछ जे ई शब्द सभक कोनो आन शब्दक हेतु प्रयोग भेल हो। एक प्रकारक शब्दक बदलामे अनेक प्रकारक शब्दक प्रयोग भए सकैछ, किन्तु जाहि शब्द विशेषक एक संज्ञा (नाम) क हेतु प्रयोग कएल जाए ओकरा सर्वनाम कहैत छैक। एकर विशेष विवरण सर्वनाम प्रकरणमे भेटत।

विशेषण

(१) बुद्धिमान् मनुष्य

(२) शीतल जल

(३) कनकट्टा लोक

(४) नकचीरा वानर

एहि पद सबमे बुद्धिमान्, शीतल, कनकट्टा ओ नकचीरा क्रमशः मनुष्य, जल, लोक ओ वानरक गुण, अवस्था आदिक बोध करबैछ। ओकरा सबमे जे विशेषता छैक तकर ज्ञान हमरा सबकेँ होइत अछि। एकरा विशेषण कहैत छैक। विशेषण ओहेन पदकेँ कहल जाइछ जे अन्य पदक गुण, अवस्था, संख्या प्रभृतिक बोध करबैछ।

* चारिम तथा पाँचम प्रकारक पदक विवरण पश्चात् देल जाएत

वचन

{ (१) विद्यार्थी पढ़ैत छथि
{ (२) विद्यार्थी लोकनि पढ़ैत छथि

{ (३) हम काल्हि अएलहुँ
{ (४) हमरा लोकनि परसू जाएब

{ (५) गाछ खसि पड़ल
{ (६) गाछ सब खसि पड़ल।

एहि वाक्य सबमे (१) 'विद्यार्थी' कहलासँ एक व्यक्तिक बोध होइछ किन्तु (२) मे विद्यार्थी लोकनि कहलासँ एकसँ अधिक व्यक्तिक बोध होइछ। ओहिना (३) मे एक व्यक्तिक बोध होइछ तथा (४) मे एकसँ अधिक व्यक्तिक।

एहिसँ ई तात्पर्य बहराइत अछि जे जखन हमरा लोकनिकेँ एकसँ अधिक संख्याक बोध करएबाक रहैछ तखन ओहि पदक अन्तमे 'सब' 'सभ' 'लोकनि' इत्यादि प्रत्यय लगबैत छी। ओ सब बहुवचन भए जाइछ। मैथिलीमे संस्कृत जकाँ तीन गोट वचन—एक वचन, द्विवचन तथा बहुवचन नहि होइत अछि। प्रत्युत एहिमे दुइए गोट वचन होईछ—एकवचन तथा बहुवचन। किन्तु यदि विचारि कें देखल जाएत तँ ओहो नहि। संस्कृत तथा हिन्दी आदिमे जेना एकवचनसँ बहुवचन भेला पर ओकर रूपक परिवर्तन होइत छैक तेना हमरा भाषामे नहि होइछ। एहिमे तँ किछु शब्द अछि जकरा कोनो पदक अन्तमे

लगाए देलासँ ओकरासँ बहुवचनक बोध होएत। ओहि शब्द सबमेसँ प्रचलित अछि सब, सभक, लोकनि, आदि।

कखनहुँ बहुवचन बनएबाक हेतु शब्दक आदिमे कोनो आन शब्द जोड़ि देल जाइत अछि जेना—

मारि लोक आएल छल

एतए 'लोक' बहुवचन अछि आओर तकर द्योतक थीक 'मारि'।

एकर अतिरिक्त संख्याक हेतु 'दू' तीन, आदि प्रयोग सेहो होइछ—यथा—

(१) दश टाका

(२) सत्रह गोट आम

(३) चालिस टा विद्यार्थी—आदि

विभक्ति

पद-प्रकरणमे हम विभक्तिक परिभाषा कए देल अछि। एतए आब ई देखबाक अछि जे विभक्तिक कतेक भेद होइछ तथा ओकर प्रयोग कोन रूप में होइछ।

(१) गाम देखैत छी।

(२) रामकेँ देखिओन्ह।

(३) मोहनसँ काज करबैत छी।

(४) बिना पोथिएँ कोना पढ़ब ?

(५) अहाँसँ काज नहि होएत।

(६) गामक रक्षा करू।

(७) कोठीमे धान अछि।

(८) एतएसँ जाउ।

एहि उदाहरण सबकेँ देखलासँ निम्नलिखित विभक्ति सब भेटत—

(१) शून्य, (२) केँ (३) सँ, (४) क तथा (५) मे

शून्य—प्रथमा

शून्य, केँ,—द्वितीया

सँ—तृतीया

एँ—तृतीया

के—चतुर्थी

सँ—पंचमी

क—षष्ठी

मे, पर, शून्य—सप्तमी

शब्द—रूपक उदाहरण चक्र

विभक्ति	गाम	माला	मालि
प्रथमा	गाम	माला	मालि
द्वितीया	गाम कें गाम	मालाकें	मालिकें
तृतीया	गामसँ ग मे	मालासँ माले	मालिसँ मालिएँ
चतुर्थी	गामकें	मालाकें	मालिके
पंचमी	गामसँ	मालासँ	मालिसँ
षष्ठी	गामक	मालाक	मालिक
सप्तमी	गाममे गामपर गाम	मालामे मालापर	मालिमे मालिपर

जाहि प्रत्ययक प्रथम वर्ण स्वर हो से स्वरादि थीक। ओहि-सँ पहिलुका 'ई'—कारक स्थान ह्रस्व 'इ'—कार, 'ऊ' कारक स्थान ह्रस्व 'उ'—कार होइत अछि। जेना—

बिना कालिएँ कल्याए नहि।
बिना टहलुएँ काज कोना चलत।

आदरमे द्वितीया तथा चतुर्थीक स्थान 'कोँ' होइत अछि—

यथा—कालीकाँ प्रणामी दिअ
महाराजकाँ देखू

'केँ'—क प्रयोग से हो एहि स्थान सबमे होइत अछि।

कारक

[१] श्री रामचन्द्र वानर सबसँ समुद्रमे पूल बन्हबाओल।

एहि वाक्यमे 'बानरसँ' 'समुद्रमे' 'पूल' 'रामचन्द्र' आदि संज्ञाक रूपान्तर थीक जाहि द्वारा एहि संज्ञा सभक सम्बन्ध 'बन्हबाओल' क्रियाक संग सूचित होइत अछि। 'रामचन्द्र' 'समुद्रमे' 'वानरसँ' आदि कारक कहबैछ। कारककेँ सूचित करबाक हेतु संज्ञा अथवा सर्वनामक आगाँ जे प्रत्यय लगाओल जाइछ ओकरा विभक्ति कहलजाइछ तथा विभक्तिक योगसँ बनल जे रूप, से विभक्त्यंत शब्द वा पद कहबैछ। तापर्य ई जे संज्ञाक आदि रूपसं ओकर संबंध वाक्यक कोनो दोसर शब्दक संग प्रकाशित होइत अछि ओहि रूपकेँ कारक कहलजाइछ। किन्तु विशेष रूपेँ क्रियाक संग अन्य संज्ञाक संबंध कोन रूपक अछि तकर परिचय कारकसँ भेटैत अछि। भाषा मध्य आठ गोट कारक मानल जाइत अछि—कतोक वैयाकरण छओ गोट मात्र मानैत छथि। हुनका मतेँ क्रियाक संग साक्षात् सम्बन्ध नहि रहबाक कारणे सम्बन्ध तथा सम्बोधन कारक नहि भेल। भाषा-मध्य, कर्त्ता, कर्म करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण तथा सम्बोधन एहि आठ गोट कारकक प्रयोग होइत अछि।

होइछ—रामकेँ कहिऔन्ह।

कर्त्ता— (१) वर्षा होइत अछि

(२) राम जाइत छथि

एहि वाक्यमे प्रश्न उठत जे [१] की होइत अछि ? तथा [२] के जाइत छथि ? उत्तरमे वर्षा होइत अछि तथा राम जाइत छथि। तात्पर्य जे 'होइत अछि' तथा 'जाइत छथि' एहि क्रियाक केनिहार वर्षा तथा राम थिकाह। एकरा कर्त्ता कही। कर्त्ता ओ भेल जे क्रियाक व्यापार करए, बिना ओकरे कार्यक समाप्ति नहि भए सकैछ। एहिमे प्रथमा विभक्तक प्रयोग होइत अछि।

कर्म कारक— (१) राम आम खाइत छथि

(२) चौकीदार चोरकेँ मारैत छैक

एहि वाक्य सबमे देखब जे काज तँ राम तथा चौकीदार करैत अछि किन्तु ओकर फल 'आम' तथा 'चोर' पर पड़ैत छैक। तात्पर्य ई जे कर्त्ताक व्यापारक फल 'आम' तथा 'चोर' पर पड़ैत अछि। एकरा कहल जाइछ कर्म। कर्म ओ भेल जाहि पर कर्त्ताक व्यापारक फल पड़ए।

कर्म दुइ प्रकारक होइछ—उक्त तथा अनुक्त। सब क्रियाकेँ कर्म नहि होइत छैक। जाहि क्रियाके कर्म होइत छैक से सकर्मक कहबैछ तथा जकरा कर्म नहि होइत छैक से अकर्मक कहबैत अछि। कतोक सकर्मक क्रिया एहनो अछि जकरा दुइ गोट कर्म होइत छैक। एकर विवेचना क्रिया-प्रकरणमे भेंटत।

वस्तुवाचक नामक पश्चात् द्वितीयाक विभक्ति शून्य रहैछ। रोटी खाउ, आम देखू। इत्यादि। द्वितीया विभक्ति 'केँ' क मनुष्येतर प्राणिवाचक संज्ञाक पश्चात् विशेष व्यक्तिक बोधक हेतु-'केँ' क प्रयोग होइछ। कैला बड़दकेँ मारू। मुदा जंगलमे एक बाघ देखल।

करण कारक— (१) कुकुर चाङुरसँ माटि कोड़ैत अछि।

(२) छूरीसँ आम काटू।

एहिमे 'कोड़ब' क्रिया तथा 'काटब' क्रिया 'चाङुर' तथा 'छूरी'—सँ सिद्ध होइत अछि। एकरा करण कारक कही। करण कारक ओकरा कहल जाइछ जकरा द्वारा क्रियाक सिद्धि होइछ-अथवा कर्त्ता जकरा द्वारा कर्म सम्पादन करैछ ओकरा करण कही। उपरका वाक्यमे कुकुर कर्त्ता अपन कार्यक सम्पादन चाङुरसँ करैछ तेँ चाङुर करण भेल। एहिमे तृतीया विभक्ति लगैत अछि।

सम्प्रदान— (१) राजा ब्राह्मणकेँ टाका दैत छथि

एहिमे देबाक व्यापार राजा ब्राह्मणक हेतु करैत छथि तेँ ब्राह्मण सम्प्रदान भेल। सम्प्रदान कारक ओकरा कहल जाइछ जकरा निमित्त कर्त्ता कोनो काज करैत अछि। एहिठाम राजा दैत छथि। ककरा निमित्त दैत छथि ? ब्राह्मणक निमित्त। तेँ ब्राह्मणसँ सम्प्रदान कारकक बोध भेल।

अपादान— (१) गाछसँ पात खसल

(२) गंगा हिमालयसँ बहराइत छथि

एहिमे 'खसब' तथा 'बहराएब' क्रियाक विभागक अवधिक

सूचना भेटैछ तेँ गाछ ओ हिमालय अपादान। अपादा[न]
कारक संज्ञाक ओहि रूपकेँ कहैत छैक जाहिसँ क्रियाक विभाग
अवधि सूचित होइछ।

सम्बन्ध कारक— (१) रामक बेटा
(२) सीताक चूड़ी
(३) हाथक आङुर

एहिमे 'क सँ सम्बन्ध सूचित होइत अछि। एकरा सम्ब[न्ध]
कारक कहैत छैक। सम्बन्ध कारक ओ भेल जाहिसँ को[नो]
दोसरा वस्तुक संग ओकर सम्बन्ध सूचित हो।

एहि कारककेँ कतोक वैयाकरण कारक नहि मानैत छ[थि]
कारण ई जे एकर क्रियाक संग अन्वय नहि होइछ।

सम्बन्धक अनेक भेद अछि—

(१ कर्त्तृकर्म भाव—पाणिनिक व्याकरण
(२) जन्य-जनक भाव—रामक बेटा
(३ ,स्वस्वामिभाव—राजाक खवास
(४) कार्य-कारण-भाव—चानीक चूड़ी
(५) अंगांगिभाव—हाथक आङुर
(६) सेव्य-सेवक-भाव—भगवानक भक्त। इत्यादि

अधिकरण— (१) ओ घरमे छथि
(२) चारपर सजमनि अछि
(३) घोड़ापर चढ़ू (४) हमरा कोड़ा बै[सू]

एहिमे कर्त्ताक व्यापरक आधार क्रमशः 'घर', 'चा[र]'
तथा घोड़ा अछि। एकरा अधिकरण कही। संज्ञाक

[रूप] जाहिसँ क्रियाक आधारक बोध होइत अछि तकरा अधि-
[क]रण कारक कही।

[सम्बो]धन— (१) हे राम! एम्हर आउ।
(२) पण्डितजी! कने सुनूत।

एहिमे 'राम' तथा पण्डितजीकेँ पहिने अपना दिशि
[आ]कृष्ट कए लैत छी, तकर पश्चात् कोनो आन क्रिया होइत
[अछ]ि। सम्बोधन एहने ठाम प्रयुक्त होइछ। सम्बोधन ओकरा
[क]ही जकरा द्वारा कोनो ध्वनि विशेषसँ ककरो अनका
[अ]पना सम्मुख कएल जाए। सम्बोधनक चिह्न दू प्रकारक
[अ]छि—आदर सूचक तथा अनादर सूचक।

(१) आदर सूचक—हे महाराज!
(२) अनादर सूचक—रओ मोहना।

एहि रूपेँ प्रत्येक संज्ञाक आठ गोट अवस्था भेल आओर
[त]ाहि सभक सूचक चिह्नो आठटा भेल।

अभ्यास

(१) कारक ककरा कही, आओर ओकर कए गोट
[भे]द अछि।

(२) सम्बन्ध आओर अधिकरणक लक्षण लिखू।

(३) आठो कारकक चिह्न सब लिखि एक-एकटा
[वा]क्य बनाउ।

(४) एकटा एहन वाक्य बनाउ जाहिमे आठो कारकक
[प्र]योग भेल हो।

शब्दरूप

हम विभक्ति प्रकरणमे लिखि आएल छी जे एहि भाष मध्य बहुवचनक कोनो रूप नहि होइछ जेना अङ्गरेजी तथा हिन्दीमे होइत अछि। बहुवचन बनएबाक काल शब्द अन्तमेसब, सभ, लोकनिइत्यादि जोड़ल जाइछ। तेँ हम केव एकवचन मात्रहिक रूप लिखब—ताहूमे तीन गोट शब्दक रू हम विभक्ति प्रकरणमे लीखि आएल छी। एतए आङन, को माझिल तथा केहन शब्दक रूप लिखैत छी—

आङन

प्रथमा—आङन

द्वितीया—अङना केँ, आङन केँ, आङन

तृतीया—अङनासँ आङनसँ आङनेँ अङनेँ

चतुर्थी—अङनाकेँ, आङनकेँ

पञ्चमी—अङनासँ, आङनसँ

षष्ठी—अङनाक, आङनक

सप्तमी—अङनामे, अङना पर, अङनामे, आङनपर, आङ

कोड़

प्रथमा—कोड़

द्वितीया—कोड़ाकेँ, कोड़केँ, कोड़

तृतीया—कोड़ासँ, कोड़सँ, कोड़ेँ

चतुर्थी—कोड़ाकेँ, कोड़केँ

पञ्चमी—कोड़ासँ, कोड़सँ

षष्ठी—कोड़ाक, कोड़क

सप्तमी—कोड़ामे, कोड़मे कोड़ापर, कोड़पर, कोड़

माझिल

प्र० माझिल

द्वि० मझिलाकेँ, माझिलकेँ

तृ० मझिलासँ, माझिलसँ, मझिलेँ,

च० मझिलाकेँ, माझिलकेँ

पं० मझिलासँ, माझिलसँ

ष० मझिलाक, माझिलक

स० मझिलामे, माझिलमे, मझिलापर, माझिलपर

केहन

प्र० केहन

द्वि केहनाकेँ, केहनकेँ, केहन

तृ० केहनासँ, केहनसँ

च० केहनाकेँ; केहनकेँ,

प० केहनासँ, केहनसँ

ष० केहनाक, केहनक

स० केहनामे, केहनमे, केहनापर, केहनपर।

लिंग

(१) ई गंगा थिकीह

(२) राम अएलाह अछि

(३) खबासिनी गेलि

(४) छोट व्यक्ति क मोट बुद्धि

एहिमे पहिला तथा तेसर वाक्यसँ स्त्रीत्वक बोध होइछ दोसरसँ पुरुषक। एहिसँ ई बोध होइत अछि जे पहिलमे गंगाशब्दसँ स्त्रीजातिक बोध होइत अछि तथा रामसँ पुरुष जातिक। शब्दक जातिक बोध जाहिसँ हो ओकरे लिंग कहल जाइछ। लिंगक व्यवहार मैथिलीमे लौकिक व्यवहार पर निर्भर करैछ। किन्तु तथापि एकर निम्नलिखित भेद पाओल जाइछ—

(१) पुंलिङ्ग—पुरुषवाचक—राम, भाए

(२) स्त्रीलिङ्ग—स्त्रीवाचक—सीता, माए

(३) उभयलिङ्ग—बाभन, राड़

(४) अलिङ्ग—लोक, नेना, बच्चा, साप

जे पुरुषवाची अछि से भेल पुंलिङ्ग, जे स्त्रीवाचक अछि से भेल स्त्रीलिङ्ग, जाहि शब्दसँ दुनू लिङ्गक बोध हो से भेल उभयलिङ्ग तथा जाहिसँ कोनो लिंगक बोध नहि हो से अलिग कहबैछ।

स्त्रीप्रत्यय

(१) अकारान्त पुंलिङ्ग नामक पश्चात् 'नी' प्रत्यय जोड़ि स्त्री बनाओल जाइत अछि—बानर—बनरनी, मुसहर—मुसहरनी चोर—चोरनी, गिदड़—गिदड़नी।

(२) आकारान्त पुंलिंगक पश्चात् 'ई' प्रत्यय जोड़ि स्त्रीलिंग बनाओल जाइछ। यथा—घोड़ा—घोड़ी, धनबाला—धनबाली

(३) जन आदि शब्दसँ स्त्रीलिंग मे 'ई' प्रत्यय अबैछ। जन-जनी; भागिन-भगिनी; हरिन-हरिनी

(४) अकारान्त उभयलिङ्ग नामसँ स्त्रीलिंग मे 'इ' प्रत्यय अबैछ। यथा—कुमार-कुमारि; मोट-मोटि; सुकुमार-सुकुमारि

(५) अकारान्त जातिवाचकसँ स्त्रीलिंगमे 'इनि' प्रत्यय होइत अछि जेना—राड़-राड़िनि; केओट-केओटिनि; अमात-अमातिनि ; बाघ-बाघिनि

(६) 'बहिआ' शब्दसँ स्त्रीलिंगमे 'किरनी' अबैछ। बहिआ-बहिकिरनी।

(७) इकारान्त शब्दमे 'नि' प्रत्यय लगैछ। जेना—तेलि-तेलिनि; धोबि-धोबिनि; मालि-मालिनि; हलुआइ-हलुआइनि; समधि-समधिनि।

(८) कुम्हार, चमार ओ कमार क स्त्रीलिंगमे ऐनि अबैछ। यथा—कुम्हार-कुम्हैनि; चमार-चमैनि, कमार; कमैनि।

(९) कतोक ठाम 'आइन' प्रत्यय सेहो अबैछ—यथा—धनिक-धनिकाइनि; सोति-सोतिआइनि, गुरु-गुरुआइनि।

(१०) सार सँ 'होजि' प्रत्यय—यथा सार-सरहोजि

किछु उदाहरण—

शब्द	प्रत्यय	रूप
कुमार	इ	कुमारि
छोट	इ	छोटि
बाभन	,,	बाभनि
गोआर	,,	गोआरि
घोड़ा	ई	घोड़ी
घरबाला	,,	घरबाली
पासी	नि	पासीनि
लहेरि	,,	लहेरिनि,
बानर	नी	बनरनी
कुजड़ा	,,	कुजड़नी
ऊँट	,,	ऊँटनी ऊँटीन
कमार	ऐनि	कमैनि
चमार	,,	चमैनि
खबास	इनि	खबासिनि, खबासनी
दास	,,	दासिनि
धानुक	आइनि	धनुकाइन
नौआ	,,	नौआइनि
केओट	इनी	केओटिनी, केओटिनि

विशेषण

(१) कठिन समय।

(२) राम बाबू नीक लोक छथि।

(३) चारि गोटए आएल छलाह।

पहिल वाक्यमे 'कठिन' 'समय'-पदक गुण प्रकाशित करैछ। केहन समय? त कठिन समय। दोसर वाक्यमे 'नीक' लोकक गुण प्रकाश करैछ। ई सब विशषण कहबैछ, कारण दोसर शब्दक विशेषता ई देखबैत अछि। विशेषण ओ पद थीक जे कोनो आन पदक गुण, संख्या प्रभृतिक द्योतक हो। अर्थात् विशेषण ओ भेल जे गुण प्रकट करैछ। जकर गुण प्रकट करैछ से विशेष्य कहबैछ। उपरमे जे उदाहरण सब देल अछि ताहिमे 'समय' विशेष्य अछि तथा 'कठिन' विशेषण इत्यादि।

विशेषणक लिंग विशेष्यक अनुसार होइत अछि। जेना — उजरा घोड़ा चरैत अछि। उजरी घोड़ी दौड़ैत अछि। छोटका काका आएल छलाह। छोटकी काकी जएतीह इत्यादि।

'क' तथा 'सन' विभक्ति युक्त शब्द क्रमशः संबन्ध विशेषण तथा सादृश्य विशेषण कहबैछ। जेना:—रामक कुकुर नीक छैन्हि, तथा सोन सन कनिआँकेँ हुड़ाड़ सन वर—एतए पहिला वाक्यमे सम्बन्ध विशेषणक तथा दोसरमे सादृश्य वाचक विशेषणक प्रयोग भेलअछि।

एक, दू, तीनि, चारि आदि संख्यावाचक विशेषण कहबैछ। यदि संख्यावाचक विशेषणमे निश्चय प्रकट करबाक हो तँ

ओहिमे 'ड' तथा 'ओ जोड़ल जाइछ। जेना--ओ चारू गोटे आएल छलाह। तीनू गोटए जएताह। दृशो गोटए जाउ।

ई ध्यानमे रखबाक चाही जे संख्यावाचक विशेषण तथा ई, ओ, जे, से आदि विशेषण अलिंग होइछ।

कखनहु विशेषण विशेष्यक बिना प्रयुक्त होइछ, तथा ओहिसँ जातिवाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाक बोध होइछ। जेना--पण्डितजी आएल छलाह। भलमानुस कतहु ठेठपना करथि। चोरि करब पण्डितकेँ उचित नहि। एहि वाक्य सबमे पण्डितजीसँ सब पण्डित तथा भलमानुससँ सब भलमानुसक ज्ञान होइछ।

जखन विशेष्य वाक्यमे नहि रहैत छैक तखन विशेषणोसँ सबटा काज भए जाइत छैक। जेना—भिखारिकेँ भीख दिऔक। हे युवक, बाबाजीकेँ घरसँ कोन प्रयोजन।

अभ्यास

(१) विशेष्य तथा विशेषणमे की भेद! सोदाहरण लिखू।

(२) ललकी घोड़ी, बड़की गाछी, पाँचो व्यक्ति, दूहू आम-मे ईकार, आकार तका ऊकार किअए भेलैक ?

विशेषणक भेद

(१) सज्जन लोक

(२) रोगी मनुष्य

(३) ऊँच घर

एहि वाक्यमे सज्जन, रोगी, तथा ऊँच—गुण, अवस्था तथा दशा प्रकट करैछ, एकरा गुणवाचक विशेषण कहल जाइछ। गुणवाचक विशेषण ओ भेल जे पदार्थक गुण, अवस्था तथा दशाक बोध कराबए।

(१) थोड़ आम

(२) बहुत टाका

(३) पैघ थारी

(४) छोटकी सेर

एहि मे थोड़, बहुत, पैघ छोट—एहिसँ आम, टाका तथा थारीक परिमाणक बोध होइत अछि। ई सब आम, थारी, टाकाक गुण प्रकट तँ करितहि अछि संगहि ओकर परिमाण सेहो सूचित करैछ। एकरा परिमाणवाचक विशेषण कहैत छैक।

(१) तीन दिन

(२) चारिम साँझ

(३) पचासो व्यक्ति

(४) बहुत लोक

एहिमे तीन, चारिम, पचासो, बहुत आदिसँ दिन, साँझ, व्यक्ति, लोक आदिक संख्याक बोध होइछ। एकरा संख्या-वाचक विशेषण कहैत छैक। संख्यावाचक विशेषण ओ भेल जाहिसँ संख्याक बोध हो। एकर तीनि गोट भेद होइत छैक—

(१) निश्चयवाचक—ओहेन संख्या जकरासँ कोनो

निश्चित संख्याक बोध हो जेना—दोसर, दोबर, तीनू, दशम इत्यादि ।

निश्चयवाचक विशेषणक सेहो तीन गोट भेद अछि—

(अ) निश्चत संख्यासूचक—एहन संख्या जकरासँ पूर्ण संख्याक बोध हो, यथा—दशो, तीनू, पाँचो, हजारो इत्यादि ।

(आ) अनुक्रमार्थक—जाहिसँ किछु क्रमक बोध हो, यथा—पहिल, दोसर ।

(ई) आवृत्तिक—जाहिसँ आवृत्तिक बोध हो, जेना—दोबर, दश गुण ।

(२) अनिश्चयवाचक—ओहेन संख्या जाहिसँ कोनो निश्चित संख्या नहि जानल जाए । जेना—सब, बहुत, थोड़, किछु इत्यादि ।

(३) पार्थक्य सूचक—जाहिसँ पार्थक्य सूचित हो । जेना—प्रत्येक, कतेक, इत्यादि ।

ज्ञातव्य—विशेषणप्रकरणमे ई विषय सतत ध्यानमे रखबाक चाही जे विशेषण कोनो शब्दमे लागि ओकर व्यापकताकेँ कम कए दैछ । जेना—मनुष्य, कारी मनुष्य । एहिमे 'कारी'सँ मनुष्यक गुण तँ भेल; किन्तु मनुष्यक व्याप्ति कम भए गेलैक । पुनः 'दढ़िभंगिआ कारी मनुष्य' एहिमे मनुष्यक व्याप्ति दोसरो वाक्यस कम भए गेलैक । तात्पर्य ई जे जँ-जँ विशेषण बढ़ल जाएत तँ-तँ ओहि शब्दक व्याप्ति कम भेल जाएत ।

दूइ गोट संज्ञाक परस्पर गुणक मिलान करबाक हेतु मैथिलीमे

'सन' तथा 'स' अबैछ । जेना—विश्वनाथ सन धनिक रामो छथि । हमरा हुनकासँ बेसी बुझल अछि । भगवानसँ पैघ विश्वमे के ?

एहि वाक्य सबमे 'सन' तथा 'सँ' एहि दून शब्दक द्वारा विश्वनाथ तथा राम, हमरा तथा हुनका, आदिमे तुलना कएल गेल अछि ।

अभ्यास

(१) विशेषणक कतेक भेद ?

(२) संख्यावाचक विशेषणक मुख्य-मुख्य भेद उदाहरणक संग लिखू ।

(३) तुलनासँ अहाँ की बुझैत छिऐक ?

सर्वनाम

(१) रामचन्द्र चौदह वर्ष वनमे छलाह । वनमे रामचन्द्रकेँ राक्षस सब कष्ट दैत छलैन्हि ।

(२) रामचन्द्र चौदह वर्ष वनमे छलाह । ओतए राक्षस सभ हुनका कष्ट दैत छलैन्हि ।

एहिमे पहिल वाक्यमे रामचन्द्र तथा वनक प्रयोग दू बेरि भेल अछि । किन्तु दोसरमे एकहि बेरि । पहिला वाक्यसँ दोसर वाक्य सुनबामे विशेष प्रिय लगैछ । यदि आओर वाक्य रहितैक तथा ओहिमे अनेक ठाम रामचन्द्रक प्रयोग होइत जइतैक तँ बजनिहारक मन तँ उबिए जइतैन्हि संगहि सुननिहारक से हो ।

किन्तु ओकरा बदलामे 'ओतए' तथा 'हुनका'—क प्रयोगसँ वाक्यक रूप बदलि गेल तथा बार-बार रामचन्द्रक उच्चारणाक झंझटि सेहो हँटि गेल। एकरे कहैत छैक स र्वनाम। सर्वनाम ओहि शब्दकेँ कही जकर प्रयोग संज्ञाक बदलामे हो। उपरका वाक्यमे 'ओतए' तथा 'हुनका' सर्वनाम थीक।

सर्वनामक लिंग कोनो नियत नहि अछि। जाहि संज्ञाक हेतु ओ अओतैक सएह लिंग ओकरो होएतैक। यथा—

(१) ओ अएलाह।

(२) ओ अएलीह।

एहि दूहू वाक्यमे पहिला 'ओ' पुंलिङ्ग अछि तथा दोसर स्त्रीलिंग।

कखनहुक गारि आदिमे स्त्रलिंग रूप भेटैत अछि जेना ओकरी, तकरी इत्यादि—

सर्वनामक भेद

(१) पुरुष-वाचक—हम, अहाँ, ओ, ताँ, आन

(२) निश्चय-वाचक—ई, ओ

(३) सम्बन्ध वाचक—जे से

(४) प्रश्न-वाचक—के, की

(५) अनिश्चय-वाचक—केओ, किछु

पुरुषवाचक सर्वनाम

हमक अतिरिक्त आन पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, एवं सम्बन्धवाचक सर्वनाम सभक प्रयोग सम्मान-सूचक तथा असम्मान-सूचकक अर्थमे होइछ, जकर ज्ञान शब्द रूपसँ होएत। किछु शब्द एहनो अछि यथा-'आन' आदि जकर प्रयोग मनुष्यादि स भिन्नहूँक हेतु होइछ। तेँ हम एकर स्पष्टीकरण सब्द रूपहिसँ करब।

उत्तम पुरुष

'हम'

प्र० हम
द्वि० हमरा

तृ० हमरा सँ, हमरे
च० हमरा
पं० हमरासँ

(बहुवचनक हेतु हमक पश्चात् 'सब', तथा हमराक पश्चात् 'लोकनि' जोड़ल जाइछ, तथा एना बनाओल शब्दक रूप नामक रूपक सदृश होइछ।)

ष० हमरा, हमर
स० हमरा मे, हमरा पर

मध्यम पुरुष

'तोँ' असम्मानसूचक

प्र०	तोँ	तोँ
द्वि०	तोहरा	तोरा
तृ०	तोहरासं, तोहरेँ	तोरासँ,तोरेँ
च०	तोहरा	तोरा
पं	तोहरासँ	तोरासँ
ष०	तोहरा, तोहर	तोरा, तोर
स०	तोहरामे, तोहरापर	तोरामें, तोरापर

अहाँ—साधारण आदर-सूचक, तथा अपने—अधिक आदर-सूचक

प्र०	अहाँ	अपने
द्व	अहाँकेँ, अहाँकाँ	अपनेकेँ, अपनुकाँकेँ
तृ०	अहाँसँ	अपनेसँ, अपनेँ, अपनुकाँस
च०	अहाँकेँ, अहाँकाँ	अपनेकेँ, अपनेकाँ, अपनुकाकेँ
प०	अहाँसँ	अपनेसँ, अपनुकासँ
ष०	अहाँक	अपनेक, अपनुकाँक
स०	अहाँमे, अहाँपर	अपनेमे, अपनेपर अपनुकाँमे, अपनुकाँपर

प्रथमपुरुष

'ए' अथवा 'ई'—सान्निध्यसूचक

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिसँ भिन्नमे
प्र०	ई	ई	ई
द्वि०	हिनका	एकरा	एकरा ई
तृ०	हिनकासँ, हिनकेँ	एकरासँ, एकरेँ	एहिसँ
च०	हिनका	एकरा	एकरा
प०	हिनकासँ	एकरासँ	एहिसँ
ष०	हिनका, हिनक, हिनकर	एकरा, एकर	एकरा, एकर
स०	हिनकामे हिनकापर	एकरामे एकरापर	एहिमे एहिपर

'ओ' विप्रकृष्ट-सूचक

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादि भिन्नमे
प्र०	ओ	ओ	ओ
द्वि०	हुनका	ओकरा	ओकरा, ओ
तृ०	हुनकासँ हुनकेँ	ओकरासँ ओकरेँ	ओहिसँ
च०	हुनका	ओकरा	ओकरा
पं०	हुनकासँ	ओकरासँ	ओहिसँ
ष०	हुनका हुनक हुनकर	ओकरा ओकर	ओकरा ओकर
स०	हुनकामे हुनकापर	ओकरामे ओकरापर	ओहिमे ओहिपर

"जे" सम्बन्ध सूचक

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिसँ भिन्नमे
प्र०	जे	जे	जे
द्वि०	जनिका	जकरा	जकरा, जे
तृ०	जनिकासँ जनिकें	जकरासं जकरें	जाहिसँ
च०	जनिका	जकरा	जकरा
पं०	जनिकासँ	जकरासँ	जाहिसँ
ष०	जनिका जनिक जनिकर	जकरा जकर	जकरा जकर
स०	जनिक मे जनिकापर	जकरामे जकरापर	जाहिमे जाहिपर

"से"

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिसं भिन्नमे
प्र०	से	से	से
द्वि०	तनिका	तकरा	तकरा, से
तृ०	तनिकासँ तनिकें	तकरासँ तकरें	ताहिसँ
च०	तनिका	तकरा	तकरा
पं०	तनिकासँ	तकरासँ	ताहिसँ
ष०	तनिका तनिक तनिकर	तकरा तकर	तकरा तकर
स०	तनिकामे तनिकापर	तकरामे तकरापर	ताहिमे ताहिपर

"के" प्रश्नवाचक

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिसँ भिन्नमे
प्र०	के	के	की
द्वि०	कनिका	ककरा	की
तृ०	कनिकासँ	ककरासँ	कथीसँ
च०	कनिका	ककरा	कथीकेँ
पं०	कनिकासँ	ककरासँ	कथीसँ
ष०	कनिका कनिक कनिकर	ककरा ककर	कथीक
स०	कनिकामे कनिकापर	ककरामे ककरापर	कथीमे कथीपर

अनिश्चयवाचक

"केओ" प्राणिवाचक

एकर प्रयोग मनुष्यादि तथा मनुष्यादिसँ भिन्नहुमे समाने अछि।

असम्मानक अर्थमे	सम्मानक अर्थमे
प्र०—केओ	केओ
द्वि०—ककरहुँ,	कनिकहुँ
तृ०—ककरहुँसँ	कनिकहुँसँ
च०—ककरहुँ	कनिकहुँ
पं०—ककरहुँसँ	कनिकहुँसँ
ष०—ककरो	कनिको
स० ककरहुँमे, ककरहुपर	कनिकहुँमे, कनिकहुँपर

"किछु" वस्तुवाचक

प्र०—किछु

द्वि०—किछु, कथू

तृ०—किछुसँ, कथूसँ

च०—किछुकेँ, कथूकेँ

पं०—किछुसँ, कथूसँ

ष०—किछुक, कथूक

स०—किछुमे, कथूमे

"आन"

	मनुष्यादिमे	मनुष्यादिसँ भिन्नमे
प्र०	आन	आन
द्वि०	अनका आनकेँ	आनकेँ आन
तृ०	अनकासँ, अनकेँ आनसँ, आनेँ	आनसँ आनेँ
च०	अनका आनकेँ	आनकेँ
पं०	अनकासँ आनसँ	आनस
ष०	अनका आनक अनकर	आनक
स०	अनकामे अनकापर आनमे आनपर	आनमे आनपर

मैथिलीमे इएह सब सर्वनाम कहबैछ तथा प्रयोगक अनुसार एकर रूप भेद भए जाइछ। एतबा धरि एहिमे ध्यान रखबाक योग्य विषय अछि जे कोन-कोन सर्वनाम दू प्रकारेँ प्रयुक्त होइछ—प्रथम, आदरमे तथा दोसर, आदराभावमे। सर्वनामक एतेक भेदक प्रायः आन भारतीय भाषामे भेटब कठिन। एकर भेदक संग क्रियाक रूप सेहो बदलैत छैक जकर विवरण क्रियाक प्रकरणमे भेटत।

———

समास

जखन दू वा दूसँ अधिक शब्द मीलि जाइछ, तखन ओकरा समास कहल जाइछ। समाससँ उत्पन्न शब्दकेँ 'समस्त' पद कहल जाइछ। समस्त शब्द एक गोट भए रहि जाइछ। यथा—पीताम्बर, सीताराम इत्यादि।

जाहि शब्दमे परस्पर सम्बन्ध रहैछ ताहीमे समास होइछ। एकत्र सम्बद्ध शब्दमेसँ दू चारि गोटकेँ जोड़लासँ समास नहि होइछ आओर ने सम्बद्ध शब्दक अन्तर्गत कोनो आन शब्दक सम्बन्धे भए सकैछ। समस्त शब्द स्वतंत्र एक शब्द बनि जाइछ।

मैथिलीक व्याकरणक अनुसार समास कएला सन्ताँ शब्दमे किछु हेरफेर भए जाइछ। जेना—घोड़ाक सवार = घोड़सवार। कान फाटल होइक जकर = कनफट्टा इत्यादि।

समास प्रधानतः चारि प्रकारक होइछ—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि आओर द्वन्द्व। तत्पुरुषक एक भेद कर्मधाराय तथा कर्मधारयक एक भेद द्विगु होइछ। तत्पुरुषक एक भेद 'नञ्' सेहो होइछ। अर्थात् सबटा मिलाए सात गोट समास होइछ।

१—अव्ययीभाव

अव्ययक संग कोनो संज्ञाक जे समास होइछ, ओ अव्ययीभाव कहबैछ। शुद्ध मिथिला भाषामे एकर स्वतंत्र

उदाहरण नहि उपलब्ध अछि। हँ तखन एतबा धरि अवश्य जे संस्कृतक जे शब्द भाषा-मध्य प्रयुक्त होइछ ताहि ठाम एकरो प्रयोग होइछ। यथा—

अनु + रूप = अनुरूप (रूपक सदृश)
स + मूल = समूल (मूल-सहित)
निर् + भय = निर्भय (भय-रहित)

२—तत्पुरुष

जाहि समासमे अन्तिम पद प्रधान हो से समास तत्पुरुष कहाओल जाइछ।

यथा—कर्मसँ हीन = कर्महीन
हिमक आलय = हिमालय
पानिक बाट = पनिबट
फुलक बाड़ी = फुलवाड़ी

कर्मधारय—जतए विशेष्य-विशेषणक तथा उपमान—उपमेयक समास हो ओतए कर्मधारय होइछ। यथा—नील जे कमल = नीलकमल, नीलोत्पल, घन सन श्याम = घनश्याम, चन्द्रमुख

द्विगु—संख्यावाचक विशेषणक संग जे समास होइछ ओकरा द्विगु कहैत छैक। पाँच + तत्व = पंच तत्व, तीन + भुवन = त्रिभुवन।

द्विगु समासक बहुत पद अनियमित रूपसँ बनैछ—यथा चौहद्दी, तिरमुहानी, अठन्नी, तेपाई इत्यादि।

३—बहुव्रीहि

समास कएलापर जाहिमे अन्यपदक प्रधानता हो, आ बहुव्रीहि समास कहबैछ। एहि समासक अर्थमे 'जे' शब्दक प्रयोग कोनो ने कोनो रूपमे होइ तहि छैक। यथा—पीत हो अम्बर जनिक ओ—पीताम्बर। एक रंग छैक जकर से—एकरंगा। टेढ़ छैक मुह जकर—से मुहटेढ़ा अथवा टेढ़मुहा। एक मति छैक जकर से—एकमतिआ। पाँचल छैक नाक जकर से—नकपिच्चा, घटल छैक करम जकर से—करमघटटू। कौआ सदृश टाङ छैक जकर से—कौटङा तथा—ललमुहा, चकरमुहा, जरलग्गू, भुतलग्गू इत्यादि।

४—द्वन्द्व

जाहिमे सब पद प्रधान हो, ओ द्वन्द्व कहबैछ। यथा—दालि-भात, चूड़ा-दही अन्न-जल, पोथी-पतड़ा, लोक-वेद, बाघ-त्रन, इत्यादि।

'नञ्' समास

निषेधवाचक 'न' क अर्थमे जे समास होइछ से 'नञ्' कहल जाइछ। यथा—अशेष अनीश्वर।

संस्कृतक नियमानुसार स्वरक पूर्व पहिलुका 'न' क 'अनन' तथा व्यञ्जनक पहिलुका 'न' क 'अ' भए जाइछ। यथा—अनन्तर, अनादि, अलौकिक, अधर्म आदि।

—

तद्धित-प्रकरण

(१) टोपीबाला, पागबाला

(२) पनिगर, दूधगर

(३) जलबाह, कोड़बाह

(४) घटबार, महिसबार

एहि शब्द सबकेँ ध्यानसँ देखलासँ एकर ज्ञान होएत जे एहिमे एक गोट शब्द तँ अछिए संगहि ओकर अन्तमे कोनो आन प्रत्यय जोड़ल अछि, तथा ओकरा जोड़लासँ ओहिमे किछु विशेषता आबि गेलैक अछि। शब्दक संग प्रत्ययक लगलासँ जे भिन्न-भिन्न शब्द बनैछ ओ तद्धितान्तपद कहबैछ। तद्धितान्त शब्द संस्कृत थीक (तत्+हित)। तत्-शब्द; हित सम्बन्धी तात्पर्य जे शब्दक भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकाशक हेतु शब्दक अन्तमे प्रत्यय जोड़ल जाइछ। एहन सब प्रत्ययक साधारण नाम तद्धित थीक। उपरका शब्द समूह सबमे (१) सँ युक्त अर्थ अर्थात् टोपीसँ युक्त, पागसँ युक्त आदि अर्थ होइत अछि।

तद्धित प्रत्यय कतेक अछि तकर कोनो ठेकान नहि तथा ओकरासँ उत्पन्न भेनिहार शब्द अनेक अछि। ओहिमेसँ किछु जे मुख्य अछि से लिखल जाए रहल अछि।

तद्धित प्रत्ययसँ बनल शब्दक कए गोट भेद कएल जाए कैछ-यथा—कर्त्तृवाचक, गुणवाचक, भाववाचक, आदरार्थक, इत्यादि।

(१) पूरणार्थक—संख्यासँ पूरणक अर्थमे 'म' प्रत्यय लगइछ-यथा पाँचम, छठम, सातम, आठम आदि।

दुइ, दु, तीनि सँ पूरण मे 'सर' प्रत्यय अबैछ, यथा दोसर तेसर।

'की' शब्द सँ संख्या—पूरण मे 'एम' अबैछ—यथा—कएम।

(२) स्वार्थिक—स्वार्थ मे 'पन', 'पना', 'पनी' तीनि प्रकार क प्रत्यय अबैछ। भाभट—भभटपन भभटपना भभटपनी।

'गील' आदि शब्दक पश्चात् आधिक्यक अर्थ मे 'गर' प्रत्यय अबैत अछि। यथा गील—गिलगर; मोट—मोटगर; लोक लोकगर आदि।

(३) भवार्थक—भवार्थकक प्रयोग उत्पन्न भेनिहार, ओ 'रहनिहार' एहि दूनू हेतुक होइछ। भवक अर्थ होइछ उत्पन्न भेनिहार, ओ 'रहनिहार'।

कतोक समय-वाचक शब्दसँ 'उक' प्रत्ययक प्रयोग होइछ। आइ, कालिह, परसू आदि शब्द हुक भवार्थक प्रयोगमे 'उक' क प्रयोग होइछ। यथा—आज—आजुक; कालिह—कालहुक, भिनसरखन—भिनसरखनुक, भोरखन—भोरखनुक, दिनुक इत्यादि।

'इल'—माझ तथा साँझ शब्दसँ भवक अर्थमे 'इल' अबैछ। यथा—माझिल, साँझिल।

भवार्थक तद्धितक किछु उदाहरण

प्रकृति	प्रत्यय	सिद्धरूप
परसू	उक	परसुका
बेर	,,	बेरुक
दिन	,,	दिनुक
एखन	,,	एखनुक
तखन	,,	तखनुक
देश	इला	देशिला
आगाँ	,,	अगिला
बीच	अला	बिचला
गाम	ऐआ (या)	गमैआ
समय	,,	समैआ
बन	,,	बनैआ
परदेश	इआ	परदेशिआ
देहात	ई	देहाती
स्वदेश	,,	स्वदेशी
गाम	औआँ	गोआँ

(४) भावार्थक—गुणवाचक शब्दसँ 'भाव' मे 'आइ' अबैत अछि। यथा-मोट-मोटाइ, गोराइ; चिकनाइ, जेठाइ, भमताइ, समर्थाइ, गोलाइ, करिआइ, इत्यादि।

'हरिअर' आदिसँ भाव मे 'ई' प्रत्यय अबैछ। यथा—हरिअरी, पीरी, लाली इत्यादि।

'बूढ़' आदिस भावमे 'आरी' प्रत्यय अबैछ । यथा बुढ़ारी ।

(५) कर्मार्थक—कर्म क्रिया थीक । यथा—हुनक कोनो कर्म दुसबाक योग्य नहि । एहि ठाम कर्मक अर्थ भेल हुनक क्रिया ।

'चरवाह' आदि शब्दसँ कर्ममे 'इ' अबैत छैक । यथा—चरबाहि, हरबाहि, कोदरबाहि, रखबारि, बगबाहि महिसबारि इत्यादि

'कहार' आदिसँ 'ई' अबैछ । यथा—कहारी, सोनारी बेगारी, खबासी, नोकरी, चाकरी ।

	प्रत्यय
(३) प्रभेदार्थक—	आ
उजर—उजरा	
कारी—करिआ	"
लाल = ललका	का
अबल—अबलाहा	हा
मधुर—मधुरौआ मधुराहा	आहा था औआ
अमत—अमतौआ, अमताहा }	

(७) युक्तार्थक—

पाग—पागबला—बला
लाठी—लाठीबला—बला
गुण—गुणमन्त—मन्त

मात्सर्य—मात्सर्यी—
गाछ—गाछी—ई
पाँजि—पँजिआइ—आइ
पानि—पनिगर—गर
नोन—नोनगर—गर

(८) अपत्यार्थक—

माम—इऔत—ममिऔत
माउसि—औत—मसिऔत
पित्ती—औत—पितिऔत

(९) स्थानार्थक—

पूब—भर—पूबभर, पूभर
दच्छिन—"—दच्छिनभर
धान—हर—धनहर
खढ़—होरि—खढ़होरि
मुसहर—ई—मुसहरी

———

क्रिया-प्रकरण

(१) हम राजा छलहुँ।

(२) हमर भाए गाम नहि अओताह।

(३) गाम के जाओ ?

उपर्युक्त तीनिटा वाक्यमे छलहुँ, अओताह तथा जाओ क्रमशः क्रिया-पद थीक। जाहिसँ कर्त्ता को करैछ वा कएल वा करत वा करओ, वा अछि वा छल वा होएत एकर बोध होइछ-तकरे नाम भेल क्रियापद, अर्थात् क्रिया-द्वारा कर्त्ताक व्यापार अथवा ओकर अवस्थाक बोध होइछ।

आएल, अएलाह, आबए, आओत आदि क्रियापदमे 'आ' एवं पढ़लक' पढ़ओ, पढ़त आदि क्रियापदमे पढ़ अछि। अतः आएल आदिक मूल भेल 'आ' एवं पढ़लक आदि क्रियापदक मूल भेल 'पढ़'। अ,पढ़ आदिक नाम थीक धातु।

चल' पढ़, हँस, जा, खा आदिक नाम सिद्ध धातु। जे धातु कोनो आन धातु वा नामसँ बहराएल नहि स्वतः भेल सिद्ध धातु।

एकर अतिरिक्त कतेको धातु अछि जे कोनहुँ नाम, वा विशेषण वा अव्यय वा कोनो सिद्ध धातुसँ बहराएल अछि एकर नाम भेल साधित धातु।

नामसँ—मनुसा, अङा, हथिआ, खटिआ, मटिआ इत्यादि

विशेषणसँ—गोलिआ, करिआ सरिआ, गोरा, सुनरा, आदि।

अव्ययसँ—उपरा, इतिआ, इत्यादि।

सिद्धधातुसँ—(१) प्रेरणाक अर्थ मे-सुना, पढ़ा, आदि

(२) दोसरासँ कएल प्रेरणाक अर्थ-सुनबा पढ़बा, आदि।

क्रियाक प्रधान दुइटा भेद होइछ। सकर्मक तथा अकर्मक।

हम सुतलहुँ। राम चललाह। सीता हँसतीह।

उपर्युक्त तीन वाक्यमे क्रियाक व्यापार तथा फल दूनू कर्त्तें मे अछि एकरा कहैत छैक अकर्मक क्रिया। अकर्मक क्रिया ओ थीक जे बिना कर्मक हो अर्थात् जाहि क्रियाक व्यापार तथा फल दूनू एके संग कर्त्तामे रहए।

(१) राम रावणकेँ मारल

(२) अहाँ भात खाइत छी

एहि ठाम 'मारल' क्रियाक व्यापार राममे अछि तथा ओकर फल रामकेँ छोड़ि रावण पर पड़ल; अर्थात् मारबाक कार्य रावण पर कएल जाइछ। एकरे सकर्मक क्रिया कहैत छैक। सकर्मक क्रिया ओ थीक जे कर्मसँ युक्त हो, अर्थात् जाहि क्रियाक व्यापारक फल कर्त्ताकेँ छोड़ि कर्ममे रहए।

कर्म ओ थीक जाहिमे क्रियाक व्यापारक फल रहैछ। उपरका वाक्य सबमे 'रावण' तथा 'भात' कर्म थीक।

यदि क्रिया सकर्मक हो, किन्तु ओकर कर्मक विवक्षा नहि रहए, अर्थात् क्रियाक केवल कार्य मात्रे सँ प्रगट कएल जाए, तँ ओ क्रिया अकर्मक सन भए जाइछ। जेना—हम सुनैत छी। ओ बजैत छथि। अहाँ कहैत छी। किछु क्रिया एहनो होइछ जकरा दू गोट कर्म रहैछ। एहन क्रिया द्विकर्मक कहबैछ। जेना—ओ हमरा एकटा प्रश्न पुछलैन्हि, हम हुनका पोथी देलिऐन्हि।

किछु सकर्मक क्रिया एहनो होइछ, जकर अर्थ कर्म रहलो संताँ स्पष्ट नहि होइछ। ओकरा हेतु कोनो पूरकक प्रयोजन पड़ैछ। जेना हम ओकरा कए देल। हम ओकर बना देल। एहि दूनू वाक्यमे कर्त्ता, कर्म, क्रिया सब किछु रहितहुँ वाक्य लुलुन लगैछ। लगले मनमे प्रश्न उठैछ जे (१) की कए देल? (२) की बना देल? एहन वाक्यमे कोनो ताहि प्रकारक शब्द जेना 'काज' तथा 'वर' बिनु जोड़लेँ अर्थ स्पष्ट नहि होएत। एहन शब्द कर्मपूरक कहबैछ।

मैथिलीमे क्रियापदक बाहुल्य अछि। एहन प्रायः कोनो क्रियापद नहि भेटत जकर दू तीनि गोट रूप नहि होइत हो। वक्ता वा लेखक पर ओकर चयन करब निर्भर करैछ! क्रियाक रूप कर्त्ता तथा कर्मक रूपक संग बदलैत रहैछ। जखन कर्त्ता केँ आदरसँ देखल जाएत तखनुका क्रियाक रूप तथा बिना आदर, समान तथा नीच दृष्टिएँ देखबामे क्रियाक रूप बदलल जाएत। एकर रूप क्रमशः आगाँ भेटत।

वाच्य

वाच्य क्रियाक ओहि रूपांतरकेँ कहैत छैक जाहिस ई जानल जाइछ जे वाक्यमे ककरा विषयमे विधान कएल गेल अछि। कर्त्ता, कर्म अथवा केवल भावक विषयमे। जेना सीता नूआ सिबैत छथि। धोती सील जाइछ। एतए रहल नहि जाइछ।

क्रियाक वाच्य—कृत तीनगोट भेद होइछ। कर्त्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य।

कर्त्तृवाच्य, क्रियाक ओहि रूपान्तरकेँ कहैत छैक जाहिसँ ई जानल जाइछ जे वाक्यक उद्देश्य क्रियाक कर्त्ता थिकैक जेना-रामदौड़ैत छथि। हम पोथी पढ़ल।

कर्मवाच्य ओकरा कहैत छैक जाहिसँ ई ज्ञात होइछ जे वाक्यक उद्देश्य क्रियाक कर्म अछि जेना—कपड़ा सील जाइछ। चिट्ठी पठाओल गेल।

क्रियाक जाहि रूपसँ ई ज्ञात होइछ जे वाक्यक उद्देश्य क्रियाक कर्त्ता अथवा कर्म केओ नहि थीक, ओकरा भाव वाच्य कहैत छैक—रौदमे चलल नहि जाइछ।

अभ्यास—

(१) वाच्य ककरा कही?

(२) कर्तृ प्रधान तथा कर्म-प्रधान क्रियाक भेदक निर्णय उदारणद्वारा करू।

(३ भाव वाच्यक परिभाषा सोदाहरण करू।

क्रियाक अवस्था

क्रियाक प्रकार कृत तीन गोट भेद होइछ (१) साधारण (२) सम्भाव्य (३) आज्ञार्थक ।

'साधारण' क्रिया ओकरा कहैत छैक जाहिमे साधारण कार्यक होएब कहल जाइछ । जेना—हम करैत छी । ओ खाए गेल । मोहन जाएत ।

सम्भाव्य क्रिया ओ थीक जाहिमे अनिश्चयता, इच्छा अथवा संशय पाओल जाइछ-यथा-यदि हम ओतए चल जाइ । ज हम पण्डित रहि तहुँ । 'होइतहुं' रहितहुँ' इत्यादि रूपक योग हेतु हेतुमद्भूत कालमे कएल जाइछ । जेना—जँ बेर पर पानि होइत तँ अन्न खूब होइतैक ।

आज्ञार्थक अथवा विध्यर्थकमे आज्ञा, उपदेश अथवा प्रार्थना सूचित होइछ । यथा—अहाँ गाम पर जाउ । काल्हि पोथी पढ़ि अबिहह, चोरी नहि करी ।

क्रियाक काल

(१) हम जाइत छी ।

(२) हम पढ़ैत रही ।

(३) हम पढ़ब ।

एहि तीनू वाक्यमे पहिलसँ ई बोध होइछ जे कार्य प्रारम्भ तँ भेल अछि; किन्तु समाप्त नहि भेल अछि । दोसरसँ, ई बोध होइछ जे कार्य प्रारम्भ भेल छल किछु दिन पूर्व तथा समाप्त सेहो भए गेल । तेसरसँ ई बोध होइछ जे कार्य एखन धरि प्राम्भ

नहि भेल अछि आब प्रारम्भ हाएत । तात्पर्य ई जे वाक्यक जे क्रिया अछि ताहिसँ एक गोट समयक बोध सेहो होइत अछि । ओहिसँ ई बूझल जाइछ जे क्रियाक समय कोन अछि । कार्य प्रारम्भ भेल अछि वा भए गेल अथवा की प्रारम्भे नहि भेल अछि । एकरा कहैत छैक 'काल अर्थात् समय' । कालक अनुसार क्रियाकेँ तीन श्रेणीमे बाँटि सकैत छी

(१) वर्त्तमान जाहिमे कार्य प्रारम्भ भेल हो, किंतु ओ समाप्त नहि भेल हो । यथा—हम पढ़ैत छी । एहि वाक्यमे पढ़ब क्रिया प्रारम्भ तँ भेल अछि, किंतु पढ़ब समाप्त नहि भेल अछि तेँ एहि ठामक क्रिया वर्त्तमान काल मे अछि ।

(२) भूतकाल—जाहिमे कार्य प्रारम्भ तथा समाप्त दूनू भए गेल हो । यथा—हम पढ़ल । एहि वाक्यमे पढ़ब का प्रारम्भ सेहो भेल तथा समाप्त सेहो भए गेल, एतादृशबोध होइछ (तेँ एहि ठामक क्रिया भूत कालिक कहाओत)

(३) भविष्य—एहन क्रिया जाहिसँ ई बोध हो जे कार्य एखन पर्यन्त प्रारम्भ नहि भेल अछि, किन्तु किछु कालक पश्चात् प्रारम्भ होएत-तेहेना स्थितिमे भविष्य कालक प्रयोग होइछ। यथा—हम पढ़ब । एतए 'पढ़ब' सँ 'पढ़लहुँ बा 'पढ़ल' एतादृश बोध नहि होइछ । एहिसँ तँ ई अर्थ होइछ जे पढ़बाक क्रिया एखन धरि नहि प्रारम्भ भेल छल 'आब प्रारम्भ होएत'

भूतकालक छओ गोट भेद अछि·(१) सामान्य-भूत (२) आसन्न-भूत, (३) पूर्णभूत (४) संदिग्धभूत (५) अपूर्णभूत तथा (६) हतुहेतुमद्भूत ।

(१) सामान्यभूत—सामान्यभूत कालक क्रियासँ ई ज्ञान होइत अछि जे कार्य बजबा वा लिखबासँ पूर्व भेल। यथा पानि 'पड़ल' 'हम अएलहुँ' एहि क्रियासँ ई बोध होइछ जे ई कार्य एखन जे बाजि वा लिखि रहल छी ताहिसँ पूर्व भेल अछि। एहिमे क्रियाक पूर्णता तँ अछि किन्तु भूतकालक कोनो विशेषता नहि।

आसन्नभूत—आसन्नभूतकालक क्रियासँ क्रियाक पूर्णता तथा कालक निकटताक बोध होइछ यथा—ओ अएलाह अछि। हम ई कार्य कएल अछि—एहि वाक्य सबमे 'आएब' तथा 'करब' आदि क्रियाक पूर्णता तँ अछिए संगहि कालक निकटता सेहो अछि। बुझि पड़ैछ जेना ई कार्य एखनहि भेल हो।

(३) पूर्णभूत—एहि कालक क्रियासँ क्रियाक पूर्णताक संग कालक पूर्णताक सेहो बोध होइछ। जेना—हम काज केने रही। महाँ गेल रही। एहि वाक्यसँ ई बोध होइछ जे 'करब' तथा 'जाएब' ई दूनू कार्य आईसँ बहुत दिन पूर्व समाप्त भए गेल। जेँ एहि क्रियासँ पूर्णताक बोध होइछ तेँ एकरा पूर्णभूत कहल जाइत छैक।

(४) संदिग्धभूत—एहि कालक क्रियाक प्रयोग तखन होइछ जखन कार्य पहिने भए गेल सन बुझि पड़ए। किन्तु ओकर निश्चय नहि रहए। यथा-ओ आएल होएताह। ओ गेल होएत। एहिठाम ई बोध होइछ जे कार्य पहिने भए गेल अछि किन्तु वक्ताकेँ निश्चय नहि छैन्हि जे काज ठीके भेल अछि अथवा नहि

तात्पर्य ई जे वक्ताकेँ सन्देह छैन्हि। तेँ सन्दिग्ध भूतकालिक क्रिया ओकरा कहैत छैक जाहि क्रियामे सन्देह हो। यथा—कार्य पहिने भए गेल रहए।

(५) अपूर्णभूत—एहि क्रियाक नामहिसँ ई बोध होइछ जे एहिमे क्रिया अपूर्ण अछि। एहिमे कार्य सम्पूर्ण नहि भेल अछि। यथा—हम लिखैत रही। हम जाइत रही। एहि ठाम काज भूत कालमे भेल, किन्तु संगहि काजक पूर्णताक बोध नहि होइछ। काज प्रारम्भ तँ अवश्य भेल, किन्तु कखन समाप्त भेल तकर ज्ञान नहि होइछ। एकरा अपूर्ण भूतकालिक क्रिया कहैत छैक। पूर्णभूत-कालिक क्रिया ओ भेल जाहिसँ भूत कालमे क्रियाक अपूर्णताक बोध हो।

(६) हेतु-हेतुमद्भूत—ओकरा कहैत छैक जकर कार्य तथा कारणक फल भूत कालमे पाओल जाए, मुदा कार्य होएतनहि। यथा—जँ पानि भेल रहैत तँ रौदी नहि होइत।

भविष्य—कालक सेहो दूगोट भेद होइत अछि-(१) सामान्य भविष्य तथा (२) सम्भाव्य भविष्य।

(१) सामान्य भविष्य—एहि कालक क्रियासँ ई बोध होइछ जे कार्य आब 'प्रारम्भ होएत। यथा—हम आब जाएब। चिट्ठी पढ़ाओल जाएत।

(२) सम्भाव्य भविष्य ओ थीक जाहिसँ भविष्य कालक बोधक संग एक प्रकारक इच्छा प्रकट होइछ। यथा—ओ लोकनि जाथि।

वर्त्तमान कालक दूगोट भेद अछि (१) सामान्य वर्त्तमान (२) सन्दिग्ध वर्त्तमान।

(१) सामान्य वर्त्तमानसँ ई बोध होइछ जे काजक आरम्भ बजबाक काल भेल अछि। जेना—बसात बहैत अछि। चिट्ठी पठाओल जाइत अछि।

(२) सन्दिग्ध वर्त्तमान—जाहि वर्त्तमान-कालक क्रियासँ सन्देह प्रकट हो। यथा—ओ अबैत होएताह।

केओ केओ तात्कालिक वर्त्तमान अथवा अपूर्ण वर्त्तमान सेहो मानैत छथि। ओकर लक्षण एहि रूपेँ कएल जाइछ जे ओहि क्रियासँ ई ज्ञान होइछ जे कार्य वर्त्तमान कालमे भए रहल अछि, किन्तु समाप्त नहि भेल अछि। यथा—गाड़ी आवि रहल अछि। चिट्ठी पठाओल जाए रहल अछि इत्यादि

अभ्यास

(१) काल ककरा कहैत छैक ?

(२) कालक कतेक भेद ? सबहक नाम लिखू।

(३) भूत कालक भेदक नाम लिखैत ओकर प्रत्येक भेद-लक्षण लिखू।

(५) संदिग्ध वर्त्तमानक की लक्षण ?

(४ भविष्य कालक परिभाषा लिखि ओकर भेदक नाम सोदाहरण लिखू।

क्रियाक लिंग, वचन तथा पुरुष-कृत भेद

लिंग, वचन, तथा पुरुषक कारण क्रियाक किछु आओर भेद होइछ तथा ओकर रूपमे सेहो किछु परिवर्तन होइछ।

क्रियामे स्त्रीलिंग तथा पुंलिंग होइछ। जखन कर्त्ता पुंलिंग रहैछ तखन ओकर क्रिया सेहो पुंलिंग होइछ। यथा—राम आएल छलाह। किन्तु जखन कर्त्ता स्त्रीलिंग रहैछ तखन क्रिया सेहो स्त्रीलिंग भए जाइछ। यथा—सीता आइलि छलीह।

क्रियामे पुरुषकृत तीन भेद होइत अछि—उत्तम, मध्यम तथा प्रथमपुरुष। वाक्यमे कर्त्ता जाहि पुरुषमे रहैछ ताही पुरुषक क्रिया सेहो ओकरा संग रहैछ। यथा—

हम अएलहुँ—उत्तमपुरुष

ताँ अएलाह—मध्यमपुरुष

ओ आएल प्रथमपुरुष

वचनक भेदसँ क्रियामे कोनो भेद नहि होइछ।

अभ्यास

(१) उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा प्रथमपुरुषक क्रियाक कर्त्ता कोन-कोन होइछ।

२—क्रियाक लिंग तथा पुरुषसँ अहाँ की बुझैत छिऐक ?

३—क्रियाक लिंग ककरा परिवर्तनसँ बदलैछ ?

—

धातु रूप

"छ" धातु

वर्त्तमान काल

	आदरमे	अनादरमे
उत्तम पुरुष—हम अथवा हमरासब	छी—	छी—
मध्यम पुरुष—अहाँ अथवा ओसब	छी—	तो छह
प्रथम पुरुष—ओ अथवा ओसब	छथि	अछि

एकर समानार्थक 'थीक' हो सेहो होइछ ओ तखन होइछ जखन कि कर्मक प्रति कोनो विशेष आदर नहि देखाओल जाइछ

	आदरमे	अनादरमे
उत्तम पुरुष—	थिकहुँ	थिकहुँ
मध्यम पुरुष—	थिकहुँ	थिकाह
प्रथम पुरुष—	थिकाह	थीक।

स्त्रीलिंगमे मध्यमपुरुषमे 'थिकीह' तथा प्रथम पुरुषमे 'थिकीह' तथा 'थीकि' क आदेश होइछ।

वर्त्तमान मे थीकक रूप

ई पोथी	हमर	थीक
,,	सोमनाक	थिकैक
,,	भूपभाक	थिकैन्हि
,,	ताहर	थिकहु
ई भगवान	केहन	थिकाह
,,	सोमनाक	थिकथीन्ह
,,	भूपभाक	थिकथीन्ह
,,	तोहर	थिकथून्ह
तों	के	थिकाह
,,	सोमनाकेँ के	थिकहक
,,	भूपभाकेँ के	थिकहून्ह
तों	के	थिकेँ
,,	सोमनाकेँ के	थिकहीक
,,	भूपभाकेँ के	थिकहून्ह
		थिकहुँ
हम वा अहाँ	पण्डित	थिकिऐक
,,	सोमनाकेँ के	थिकिएन्हि
,,	भूपभाकेँ के	थिकिअहु वा
,,	तोहर के	थिकिओक

"दे" धातु

कर्त्ता	फलभाक्	भूत	भविष्य	प्रेरणा	इच्छा
सोमना		देलक	देत	देअओ, देअ	देअए
"	ओकरा	देलकैक	देतैक	दौक	दैक
"	हुनका	देलकैन्हि	देतैन्हि	दौन्हि	दैन्हि
"	तोरा	देलकौक	देतौक	दौक	दौक
भूपभा		देलन्हि	देताह	देथु	देथि
"	ओकरा वा हुनका	देलथीन्ह	देथीन्ह	देथून्ह	देथिन्ह
"	तोरा	देलथुन्ह	देथून्ह	देथून्ह	देथुन्ह
तों		देलह	देबह	दएह	दे वा दएह
"	ओकरा	देलहक	देबहक	दहक	दहक
"	हुनका	देलहून्ह	देबहून्ह	दहून्ह	दहून्ह
तों		देलें	देबें	दे	दहीक
"	ओकरा	देलहीक	देबहीक	दहीक	दहोक
"	हुनका	देलहून्ह	देबहून्ह	दहून्ह	दहून्ह
हम वा अहाँ		देल, देलहुँ	देब	दिअ	दी
"	ओकरा	देलिऐक	देबैक	दिऔक	दिऐक
"	हुनका	देलिऐन्हि	देबैन्हि	दिऔन्हि	दिऐन्हि
"	तोरा	देलिअहु	देबहु	दिअहु	

जखन क्रियासँ इच्छा प्रकट करबाक होइछ तखन धातुमे किछु प्रत्यय लगैछ। यथा—आनन्द होअए। लोक नाच देखए। एहिठाम बजनिहारक इच्छा छैन्हि जे 'आनन्द होअए' तथा 'लोक नाच देखए'। तात्पर्य ई जे कर्त्तृगत अनादारमे 'अए' प्रत्ययक प्रयोग होइछ।

पुनः कतोक ठाम 'ऐक' 'अहु' तथा 'औक' सेहो अबैछ। यथा—हमर इच्छा जे लोक पाहुन्हकेँ देखैन्हि। तोरा लोक कहहु। लोक तोरा पर प्रसन्न रहौक आदि!

किन्तु कर्त्तृगत आदरमे 'अथि' प्रत्यय अबैछ। 'अथिन्ह' तथा 'अथून्ह'क प्रयोग सेहो होइछ। यथा—महाराज प्रजाकेँ देखथि। महाराज हुनका देखथीन्ह। महाराज तोरा संग लए जाथून्ह।

अधिक अनादरक अर्थमे रहने 'अहिँ' 'अहिक' तथा अहून्हक प्रयोग होइछ। यथा—तों देखँहि। ओकरा देखहीक। हुनका देखहून्ह।

प्रेरणार्थक क्रिया

अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाक अतिरिक्त एक गोट आओर क्रिया होइत अछि। ओकर नाम थिकैक प्रेरणार्थक। जखन कर्त्ता स्वयं अर्थात् विना प्रेरणाक क्रियाक व्यापार करैछ तखन क्रियाक प्रयोग स्वार्थक होइछ किन्तु जखन कर्त्ता कोनो दोसर कर्त्ताक प्रेरणासँ क्रिया करैछ तखनुका क्रियाक प्रयोग प्रेरणार्थक होइछ। प्रेरणार्थक क्रियामे एक गोट प्रेरक नहि प्रत्युत कएगोट प्रेरक भए सकैछ।

उदाहरण

उठब	उठाएब	उठबाएब
चढ़ब	चढ़ाएब	चढ़बाएब
बाजब	बजाएब	बजबाएब
पिघलब	पिघलाएब	पिघलबाएब
लटकब	लटकाएब	लटकबाएब
भीजब	भिजाएब	भिजबाएब
घूमब	घुमाएब	घुमबाएब
डोलब	डोलाएब	डोलबाएब
देब	देआएब	देअबाएब
धोअब	धोआएब	धोअबाएब
पीब	पिआएब	पिअबाएब
	पिबाएब	
कटब	काटब	कटबाएब
गड़ब	गाड़ब	गड़बाएब
छूटब	छोड़ब	छोड़बाएब
रहब	राखब	रखबाएब

संयुक्त क्रिया

(१) खा जाएब
(२) पिबि लेब
(३) हेराए देब
(४) भए जाएब

एहि क्रिया सबमे दू दू गोट क्रियाक संयोग अछि। एकरे संयुक्त क्रिया कहैत छैक। संयुक्त क्रिया दू धातुक योगस बनैत अछि।

दोसर विषय जे एहि क्रियामे ध्यान देबाक योग्य अछि ओ थीक एकर पहिल एकर प्रधानता। पहिल क्रियामे 'खा जाएब' एहिठाम 'खा' क प्रधानता अछि एवं क्रमे 'खा' 'पीब', हेड़ाए' आदिक मुख्यता अछि। तात्पर्य ई जे संयुक्त क्रियाक आदि क्रिया प्रधान होइत अछि। ओकरे अनुसार धातुक अर्थ तथा ओकर सकर्मक अकर्मक होएब बूझल जाइत अछि।

किछुसंयुक्त क्रियाक उदाहरण—

(१) बाजि उठब
काटि देब; काटि लेब
राखिलेब, राखि देब
सूति रहब
चल जाएब, चलि जाएब
(२) चलि सकब
बाजि सक
लिखि सकब
(३) जाए देब
कहए देब
खाए देब

(४) जाए पाबथि—ओ जाए ने पाबथि

खाए पाबथि—ओ खाए ने पाबथि

(५) आएल करब

कएल करब

नाम धातु

मैथिलीमे एहन अनेक धातु अछि जे नामसँ बनल हो। ओकर गणना शुद्ध धातुमे नहि होइछ। नामसँ बनबाक कारणेँ ओ नामधातु कहबैछ।

(१) बहुत नाम-धातु शब्दमे 'इब' तथा 'अब' जोड़लासँ बनैछ। जेना—

मुक्का—मुकिआएब—मुकिअबैत छथि

टाल—टलिआएब—टलिअबैत अछि

घट्टी—घटिआएब—घटिआइत अछि

दृष्टि—डिठिआएब—डिठिअबैत अछि

थुथून—थुथनबैत—थुथनबैत छैक

नोन—नोनिआइत, नोनिआएब

घर—घरिआएब—घरिआएल छथि

नोर—नोराएब—नोराइत छथि

गोँ गोँ—गोँ ङिआइत अछि

थापर—थपराएब

दूर-दूर—दुरदुराएब

कृदन्त प्रकरण

(१) हँसनिहार

(२) देखने

(३) सुतनमा

(४) बिसराह

एहि शब्द सबमे धातुक संग प्रत्ययक प्रयोग भेल अछि। एकरे कृदन्त कहैत छैक। धातुक संग प्रत्यय लगलासँ एहन जे शब्द बनैछ जाहिसँ कर्त्तृत्व आदि बुझल जाइछ, से कृदन्त कहबैछ। धातुसँ प्रत्यय लगला पर अनेक प्रकारक शब्द बनैछ, जाहिमे चारि गोट प्रधान अछि। यथा—[१] कर्त्तृ-वाचक, [२] कर्मवाचक [३] करणवाचक [४] भाव-वाचक

कर्त्तृवाचक

[१] धातुसँ पर कर्त्तामे 'अनिहार' प्रत्यय अबैछ। यथा—देखनिहार, अर्थात् दर्शनकर्त्ता, बेचनिहार, पठओनिहार, पीनिहार, सीनिहार, मुइनिहार आदि। किन्तु यदि 'भर' तथा 'धर' धातुक पूर्व पानि' तथा 'लाठी' कर्म रहत तँ ओहि धातुसँ 'कोनो' प्रत्यय नहि आओत। यथा—पनिभर, लठिधर अर्थात् पानि भरनिहार, लाठी धएनिहार वा धारण कएनिहार। जोत धातुसँ कर्त्तामे 'आ' प्रत्यय अबैछ। यथा—जोता अर्थात् जोतनिहार

[२] एहन धातु जकरा पूर्व अधिकरण वा कर्मक प्रयोग

रहैछ ओहेन धातुसँ कर्त्ताम 'आ' प्रत्यय अबैछ। एतए एतबा स्मरण राखक थीक जे एहन शब्दक प्रयोग विशेष रूपेँ अनादरेमे होइछ—थध—यथा माथमे ठेकनिहार, मथठेका चौकठि; दूध बेचनिहार दुधबेचा, एहि कारेँ-घरपैसा, बघमारा आदि

[३] अकर्मक धातुसँ पर कर्त्तामे 'अल' प्रत्यय अबैछ, तथा ई 'अल' भूतकालक द्योतक होइछ। यथा—बैसल ब्राह्मण आबथु।

क्रियामे उत्कर्षप्राप्त कर्त्तामे 'अनमा' प्रत्यय अबैछ। जेना—ई नेना सुतनमा अछि। ई गाछ फड़नमा अछि।

'बिसर' आदि धातुसँ कर्त्तामे आह प्रत्यय अबैछ। यथा-बिसराह अगुताह, इत्यादि।

[५] धातुसँ 'आहु' प्रत्यय कएलासँ—उपजाहु, जुमाहु इत्यादि।

[६] 'ऐआ'—गवैआ, बजबैआ इत्यादि एकर अतिरिक्त मैथिलीमे संस्कृतक कृदन्त सेहो बहुत अछि। यथा—

[१] ल्युट (अन)	मदन
[२] अच	गृहस्थ
[३] 'अक'	पाचक, पाठक
[४] तृन, तृच्	कर्त्ता, दाता आदि

उपर्युक्त कर्तृवाचक शब्द संस्कृत व्याकरणानुसार बनैछ। ओहि नियमक वर्णन मैथिली व्याकरणमे अनावश्यक। ओकर परिचय मात्र कराओल गेल अछि।

कर्मवाचक

[१] 'उआ'—'छन' आदि धातुसँ पर कर्ममे 'उआ' अबैछ।
यथा—छनुआ, भरुआ, किनुआ, रन्हुआ इत्यादि

[२] 'औआ'—'छिप', 'नुक' आदि धातुसँ पर कर्ममे 'औआ' अबैछ। यथा—चोरौआ, छिपौआ, नुकौआ इत्यादि

[३] 'अन' तथा 'अना'—ओछाओन तथा ओछओना, इत्यादि

[४] सकर्मक धातुसँ पर भूतकालमे अल प्रत्यय अबैछ। यथा—देखल वस्तु आएल। देल रुपैया नहि बिसरत।

[५] 'आर'—देख' ओ 'चिन्ह' धातुसँ पर कर्ममे 'आर' प्रत्यय अबैत अछि। यथा—देखार, चिन्हार।

करणवाचक

(१) 'अना'—करण अर्थमे 'देख' आदिसँ पर 'अना' अबैछ। यथा—देखना रुपैया, टेकना, ठोकना' पिटना, मुनना, रोकना, आदि।

(२) 'अनि'—'बाढ़' आदिसँ करणमे यथा-बाढ़नि, चालनि, इत्यादि।

(३) 'अनो'—'कतर' आदि धातुसँ यथा—कतरनी, थकरनी, नहरनी, खोखरनी, झरनी, आदि

भाववाचक

कृदन्तीय भाववाचक शब्दसँ केवल व्यापार मात्रक बोध होइछ। निम्नलिखित कृदन्त भाववाचक शब्द भिन्न-भिन्न प्रकारक प्रत्ययक संयोगसँ बनल अछि—

(१) 'अब'—देखब, देखबाक, पठाएब, देब इत्यादि

(१) धातु मात्रसँ पर भावमे 'अनाइ' प्रत्यय अबैत अछि देखनाइ, पठ्ओनाइ, धएनाइ, भेनाइ, पिनाइ इत्यादि ।

(३) बहुत ठाम 'अनाइ' क स्थान पर बिना प्रत्ययक प्रयोजन सिद्ध भए जाइछ यथाः—छीक, छिकनाइ, फुक, फुकनाइ, छेक, छेकनाइ इत्यादि।

(४) 'उलट' आदिसँ 'अन' प्रत्यय अबैछ। यथा—उबटन' पटकन, जीवन, मरण इत्यादि ।

(५) 'बला'—देखएबला, आबएबला इत्यादि

(६) 'सन्ताँ' एहि अव्ययक योगमे धातुसँ पर 'अल' प्रत्यय अबैछ ताहिसँ पर 'आ' प्रत्यय सेहो अबैछ यथा—देखला सन्ताँ, गेला सन्ताँ।

(७) 'देख' आदि धातुसँ पर परस्पर क्रियामे 'ई' प्रत्यय अथवा 'ओवलि' प्रत्यय अबैछ। यथा—देखा-देखी वा देखौअलि, बजराबजरी वा बजरौबलि।

छन्दो—विचार

छन्द ओ थीक जाहिमे मात्रा ओ वर्णक गनती रहैछ। छन्दकेँ पद्य से हो कहल जाइछ। गद्यमे मात्रा ओ वर्णक गनतीक कोनो बन्धन नहि रहैछ, किन्तु छन्दमें ओ बन्धन परमावश्यक।

गुरु तथा लघुक विचारसँ वर्ण दुइ प्रकारक होइत अछि। ह्रस्व अथवा एक मात्रिककेँ लघु, आओर दीर्घ अथवा द्विमात्रिककेँ गुरु कहैत छैक।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ औ-ई सब दीर्घ कहबैछ तथा एकरा सबसँ युक्त वर्णो दीर्घ होइछ। एकर अतिरिक्त अन्यान्य स्वर अ, इ उ, तथा एहिसँ युक्त वर्ण ह्रस्व कहबैछ।

छन्दमे दीर्घक चिह्न अद्धे 'अ' क सदृश (ऽ) होइछ आओर ह्रस्व चिह्नमे एकटा पाइ दए देल जाइछ (।)।

अनुस्वार आओर विसर्गसँ युक्त ह्रस्वो अक्षर दीर्घ गनल जाइछ। संयुक्त अक्षरक पहिने यदि ह्रस्व अक्षर रहैक तँ ओकरो गनती दीर्घमे होएतैक। पदान्तरमे संयुक्ताक्षर रहलासँ पूर्व पदक अन्तक अक्षर दीर्घ नहि गनल जाइछ। कतोक ठाम ह्रस्वे जकाँ दीर्घो पढ़ल जाइत अछि। यथा—बाघछाल पहिरन, कालिक उरग तन, के परिछत छवि देखि डरू। ललित गौरि छवि भनथ गोविन्द कवि, गौरि कुमारि रहथु बरू। एहिठाम बाघछालमे आकार, गौरिमे इकार, गोविन्दमे ओकार, देखिमे एकरा लघु कएल गेल अछि।

जाहिमे वर्णक गनती रहैछ से वर्णवृत्त आओर जाहिमे मात्राक गनती रहैछ से मात्रावृत्त कहबैछ।

वर्णवृत्तमे आठगोट गण होइछ। प्रत्येक गणमे तीन वर्ण होइछ। यथा—

संख्या	नाम	रूप
१	मगण	ऽऽऽ
२	यगण	।ऽऽ
३	रगण	ऽ।ऽ

४	सगण	IIS
५	तगण	SISI
६	जगण	IS
७	भगण	SII
८	नगण	III

मात्रा-वृत्तकेँ पाँच गोट गण होइछ।

१	टगण	SSS
२	ठगण	SSI
३	डगण	SS
४	ढगण	SI
५	णगण	S

वृत्तक तीन गोट भेद होइछ। समवृत्त, अर्द्ध-समवृत्त तथा बिषमवृत्त।

१. जकर चारू चरण समान होइछ से समवृत्त कहबैछ
२. जकर दू चरण सम रहए तथा दुइ गोट विषम अथवा जकर दूसँ अधिक चरण समान नहि हो से अर्द्ध-सम-वृत्त कहबैछ।
३. जकर चारू पद असमान रहैक तकरा बिषमवृत्त कहैत छैक।

२६ वर्णसँ अधिक वर्णवाला वृत्त दण्डक कहबैछ। एकर दुइ गोट भेद अछि—[१] गणबद्ध

[२] मुक्त। गणबद्ध दण्डकमे वर्णक संख्या गणक अनुसार नियमित होइछ तथा मुक्तकमे केवल वर्णक संख्या नियत रहैछ। गण नहि नियत रहैछ।

———

छन्द क उदाहरण

छन्द अनेक अछि। उदाहरणार्थ किछु एतए देल जाइछ—

(क) मात्रिक

(१)— १३. ११ मात्रा

दोहाक पहिल एवं तेसर चरणमे तेरह-तेरह तथा दोसर आओर चारिममे एगारह-एगारह मात्रा रहैछ। यथा—

बटुक-मनोरम वचन सुनि विहुँसि कहल जगदम्ब।
अति सप्रेम सारद सुनिअ, करिअ सुजन अवलम्ब।

(गौरी-परिणय)

(२) सोरठा— ११. १३ मात्रा

दोहा केँ ठीक उलटि देलासँ सोरठा बनैत अछि—

सुरसरिता तट आबि, निरत तपस्या मे भेलहुँ।
शङ्कर दर्शन पाबि, पूर्ण ह्वैत मन लालसा॥

(गौरी परिणय)

(३) रोला— २४ मात्रा

रोलाछन्दक प्रत्येक चरणमे चौबिस गोट मात्रा होइत छैक तथा विश्राम एगारहम मात्रापर होइत छैक। यथा—

किंवा हमर विनाश अहाँ यदि करै न चाही।
हमर यशोवपुपर दयालुओ होमक चाही॥
हमरा सन नरकेँ एहि भौतिक मांस,पिंडपर।
अवहेले सन रहए भाव कारण ई नश्वर॥

(रघुवंश)

(४) उल्लाला— १३ वा १५ मात्रा

उल्लाला छन्दक प्रत्येक चरण मे १३ अथवा १५ मात्रा रहैछ। यथा—

पावक पजरल शिखा युत, परिक्रमा वरवधु कएल।
मेरुक चौदिशि दिवस निशि, संग घुमए जनु छवि छएल॥
(रघुवंश)

(५) जयकरी— १५ मात्रा

एकर प्रत्येक चरणमे १५ मात्रा रहैत छैक। अन्तमे एक गुरु एवं एक गोट लघु रखबाक चाही। इएह छन्द मिथिला भाषा मध्य 'चउपाइ' अथवा चौपाइक नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि—

गन्धर्वक बहु मंगल गान। किन्नरि नाचि सुनाओल तान॥
देखि महेशक अभिनव काँति। देव वधू हर्षित सब भाँति॥
(गौरी-परिणय)

(६) रूपमाला— १४ मात्रा

एकर प्रत्येक चरणमे २४ मात्रा रहैत छैक। चौदहम मात्रा-पर विश्राम होइत छैक। एकर प्रत्येक चरणक अन्त मे एक गोट लघु रहब आवश्यक। एहि छन्दक नाम कतोक ठाम 'रूपक-माला' सेहो भेटैत अछि।

श्रील भारत भाग्य भूतल उदित उन्नत भानु।
बुद्धि विद्या बल विभव सौं बढ़ल भवमे नाम॥
जोति जगमग जागु जग यश, रूपमाला जानु।
ज्ञान-गरिमा गुणक गणना सतत हो सब ठाम॥
(सुभद्रा-हरण)

(७) हँसवादिनी २२ मात्रा

एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे २२ गोट मात्रा रहैछ तथा विश्राम बारह मात्रापर होइछ। एकरा केओ-केओ 'कुंडल' सेहो कहैत छथि—

हाय रे कतए गेली विदेह भूपबाला।
वन-दुख अनुभूत आइ शून्य पर्णशाला।
विधिओ नहि निधन देवि वृद्धि अधिमाला॥
विपतहुमे विपत घोर दुर्दशा विशाला॥
(रामायण)

(८) सरसी २७ मात्रा

एकर प्रत्येक चरणमे सत्ताइस गोट मात्रा होइछ। यथा—

मञ्जर मह-मह करइत छल छल जखन वसंत विकास।
मंद-मंद गुंजर कएल तत मिलि भोगल रसरास॥
दुर्दिन-वश आमक लतिकासँ मलिन भेल बड़ खीन।
भ्रमर छोह तकरासँ छाड़ी अहँसन के मति-हीन॥
(भामिनी-विलास)

(९) हरिगीतिका २८ मात्रा

एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे अठाइस गोट मात्रा रहैत छैक आदिसँ सोलहम मात्रापर विश्राम होइत छैक। यथा—

देव यौतुक अमित रत्नक गो गजेन्द्रक के गनए।
रक्त कम्बल युत सुन्दर, घाटकादिक बन ठनए।
दास-दासी रत्न भूषित द्विज बटुक शतटा छला।
गौरि भ्राता तुल्य शोभा, सारदुति अतिशय भला॥
(गुणवंत लाल)

(१०)छप्पय (रोल × उल्लाला)

एहि छन्द मे छओ गोट चरणहोइछ। तेँ एकरा कतेक गोटए 'षट्पद' सेहो कहैत छैक! एकर प्रारम्भक चारि चरण रोला एवं शेष दू चरण उल्लाला रहैत अछि। यथा—

रेरे कुमति कठोर मनुज गणना रघुनन्दन,
नदी कि गंगा होथि वृक्ष की छथि हरिचन्दन
की ऐरावत करटि इन्द्रबाजी की छथि हय,
स्त्री की रंभा होथि मूढ़ि मति सुनरे निर्भय॥
की कृतयुग युगमे थिकथि, धन्वी मनसिज के गनत।
जानि प्रताप त्रिभुवन-विदित, हनूमान कपि केकहत॥

(चन्दा झा)

(१)कुंडलिया (दोहा + रोला)

एहिमे छओ गोट चरण होइत छैक। प्रथम दुइ चरणमे दोहा एवं शेष चारि चरण मे रोला रहैत छैक—

मदसौं आन्हर बनल अहँ, कठिन बनक भूभाग।
गजपति मम उपदेश ई, मानू युत अनुराग॥
मानू युत अनुराग निमिष एको जनि अटकू।
कही मित्रता-विवश एतएसौं झट दए सटकू॥
चट्टानोकेँ हाथी बुझि पाड़ए खर-नख सौं।
गिरिक गुहामे सिंह एतए अछि सूतल मदसौं॥

(भामिनी-विलास)

(१२) बरवा— १२ मात्रा

एहि छन्दक पहिल तथा तेसरमे बारह मात्रा तथा दोसर ओ चारिम चरणमे सात गोट मात्रा रहैछ—

चढ़ल सेजपर गुपचुप, बड़ बदजाति।
कलबल उठि हम धएलहुँ, सुतली राति॥
पकड़ि छाड़ि पुनि देलहुँ, लखि मनहूस।
"हे सखि! प्रियतम तोहर?" "नहि सखि मूस॥"

(अलङ्कार-दर्पण)

(ख) वर्णवृत्त

१.।मनोहर—

एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे एक सगण आओर एक जगण रहैछ—

सुषमा ललाम, जनु रूप काम।
रघुनाथ वीर, धृत चाप तीर॥

(छन्द-परिचय)

(२) वसन्त-तिलका—

एहि छन्दक प्रत्येक मे क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण, एवं दू गोट गुरु रहैछ। यथा—

रे दुष्ट लागल क्षुधा फल तोड़ि खैलौ।
कैलैं उपद्रव ततै तरु तोड़ि देलौ॥
हैतौ बहूत नहि सम्प्रति विघ्न भेलौ।
अस्त्र प्रहार कयलैं हम प्राण लेलौ॥

(रामायण)

(३) मन्दाक्रान्ता

एहि छन्दक प्रत्येक चरण क्रमशः मगण, भगण, नगण, दुइ तगण एवं दुगोट गुरुसँ बनैछ—

विद्याभ्यासी सकल सुखकेँ शीघ्रता सौँ पबैये।
जैठाँ तैठाँ स्वपुर अनतौ कीर्ति भागी बनैये॥
राजा मानए जन गुरु बुझए दुःखमे ताष आबए।
ज्ञानी हर्षे खल जन कुढ़ए मूख संक्षोभ पाबए॥

(४) शिखरिणी—

एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु एवं एक गुरु रहैछ। यथा—

करै छैं की बाबू! विमुख रणमौं भागि घरमे।
कतौ सौँ की जैबेँ पुनि न कहिओ काल करमे॥
वृथा शत्रु व्यङ्ग्यो सुनि कग हसी ढेर सहबेँ।
यशोनष्ट प्राणी मृतक सन भै व्यर्थ रहबेँ॥

(५) सवैया—

सवैयाक प्रत्येक चरणमे बाइससँ छब्बीस अक्षर धरि होइत छैक। गणक अनुसारेँ एकर आठ गोट भेद होइत छैक। एहिठाम एक गोटक उदाहरण देल जाइछ—

चैत न चैतन ोरनमे वन भृङ्ग नचैत न नीक लगै अछि।
भूखन भार लगै अछि भूख न भूखनगादि न नीक लगै अछि॥
भाव मचान न चानन चानन! चानन लेप करेज मलै अछि।
ने पतिआए लगौक सखी सबने पति आएलजी दहलै अछि॥

———

